

स्वात्मबुद्धिप्रकाश

वीर संवत्-२५३५ : अंक-१६० वर्ष - १४ : ज्ञान्युआरी-२०११

अषाढ सुद ४, रविवार ता. ८-०७-१९७८.

पूज्य गुरुदेवश्री कानञ्जस्वामीनुं प्रवचन वचनामृत-८४. प्रवचन-३२

‘ध्रुवतत्त्व में अकाग्रता से ही निर्मल पर्याय प्रगट होती है...’ यहाँ भी यही आया. ध्रुव जो ज्ञान का सागर, अतीन्द्रिय आनंद का सागर प्रभु (है) वल ध्रुव-लमेशा रहनेवाला है. ‘ध्रुवतत्त्व में अकाग्रता से...’ अकाग्रता पर्याय है. त्रिकावी ध्रुव में अकाग्रता से (निर्मल पर्याय होती है). राग में अकाग्रता से दुःख होता है और ध्रुवतत्त्व में अकाग्रता होने से निर्मल पर्याय प्रगट होती है. राग में अकत्व होने से दुःख उत्पन्न होता है और ध्रुव तत्त्व में अकाग्रता होने से निर्मल पर्याय नाम आनंद की पर्याय उत्पन्न होती है. समज में आया ? सूक्ष्म बातें करते हैं और कलते हैं समज में आया ? बापू ! ऐसा मार्ग है, भाई ! आडा..!

ध्रुव तत्त्व पर अकाग्रता से (अर्थात्) शाश्वत यीज पर दृष्टि करने से, वहाँ अकाग्रता होने से निर्मल वीतरागी आनंद की दशा प्रगट होती है. रागपर अकाग्र होने से दुःख की दशा उत्पन्न होती है, आकुलता की दशा उत्पन्न होती है. भगवान ध्रुव आत्मा, चारों ओर दृष्टि समेटकर ध्रुव पर दृष्टि करने से, उसमें अकाग्र होने से निर्मल पर्याय प्रगट होती है. उसमें से तो वीतरागी अतीन्द्रिय आनंद की दशा प्रगट होती है. आडा..डा..! अतीन्द्रिय आनंद प्रगट हो, वल धर्म (है). आडा..डा..! ऐसी महंगी यीज (है).

ध्रुव तत्त्व में. लेकिन वल तत्त्व है ना ? आत्मतत्त्व है ना ? है तो ध्रुव है ना ? बढलती पर्याय भले हो. परंतु वस्तु की अपेक्षा से ध्रुव है ना ! आडा..! सोना सोनेरूप कायम रहकर, कडा, कुंडल की अवस्था होती है. कडा, कुंडल की अवस्था ध्रुव नहीं. सोना सोनेरूप लमेशा है. ऐसे अवस्था पलटती है परंतु वस्तु की अपेक्षा से लमेशा ध्रुव है. आडा..डा..! ऐसा उपदेश ! यल मार्ग तो ऐसा है, भाई ! वर्तमान में तो ये करो, व्यवहार करो, व्यवहार से निश्चय हो जायेगा. निवृत्ति लो, स्त्री-कुटुंब छोडो, सन्यास लो, ये लो.. धूल में भी नहीं है. आडा..डा..! बाहर का त्याग-ग्रहण तो स्वरूप में है ही नहीं.



त्यागउपादानशून्यत्व शक्ति. आत्मा में ऐसी अक शक्ति-गुण है कि रजकण का ग्रहण करना और रजकण का छोड़ना ऐसा आत्मा में है नहीं. परद्रव्य को कैसे ग्रहण और कैसे छोड़े ? मात्र विकारी दशा को माना है, ग्रहण किया है, पर्याय में अपनी है ऐसा माना है. अपने ध्रुवपर दृष्टि करने से राग का त्याग दृष्टि में होता है वड (वास्तविक) त्याग है. बाकी बाहर का त्याग (किया), कपडे बदलकर सन्यासी हो गया और पीले कपडे पहन लिये (वड त्याग नहीं है). 'रजनीश' पीले कपडे पहनता था ना ? अरे...! शरीर ही जहां उसका है नहीं तो कपडे उसके कहां से हो गये ?

'ध्रुवतत्त्व में अकाग्रता से डी...' अकाग्रता से डी. राग की अकाग्रता से निर्मल पर्याय कभी नहीं होती. व्यवहार दया, दान, व्रत, भक्ति, तप आदि कोई भी विकल्प हो उस राग से कभी निर्मल पर्याय नहीं होती. क्योंकि राग स्वयं मलिन है. मलिनमें से मलिन पर्याय होती है. भगवान त्रिकावी आनंद शुद्ध निर्मल है उसमें अकाग्रता होने से निर्मल सम्यग्दर्शन, ज्ञान, शांति ऐसी निर्मल पर्याय प्रगट होती है. ये निर्मल पर्याय प्रगट हुई वड धर्म है. राग प्रगट हुआ वड अधर्म है. आडा..डा..! आया ?

'विभाव का अभाव होता है.' दो बात कही. व्यय, उत्पाद और ध्रुव, तीनों बात उड पंक्ति में ले ली. क्योंकि वस्तु 'उत्पाद-व्यय-ध्रुव युक्तं सत्' (है). नयी अवस्था उत्पन्न होती है, पुरानी अवस्था व्यय होती है और अपनी यीज ध्रुव स्वरूप से डमेशा रहती है. आडा..डा..! अब ध्रुव जो यीज है उसमें अकाग्र हो तो उसमें तो निर्मल पर्याय प्रगट होती है. उत्पाद और विभाव जो राग है उसका व्यय होता है और ध्रुव का तो आश्रय है. आडा..डा..! समज में आया ? यड सूत्र तो बहुत प्रसिद्ध है-'उत्पाद-व्यय-ध्रुव युक्तं सत्'.

उत्पाद-व्यय-ध्रुव (नाम का) भी आत्मा में अक

गुण है. ४७ शक्ति. थोडी सूक्ष्म बात है, भाई ! यड तो अवलोकन की बात है. संसार की परिपाटी से यड भिन्न यीज है. क्या कहते हैं ? अंतर में आत्मा जो है उसमें ऐसा अक गुण है, ऐसी शक्ति है कि उत्पाद-व्यय-ध्रुव हो ऐसा उसका अक गुण है. उत्पाद और व्यय करना पडे ऐसा नहीं. आडा..डा..! भगवानआत्मा ध्रुव में अक ध्रुव गुण है कि जिसमें अकाग्र होने से उत्पाद-व्यय-ध्रुव के कारण निर्मल पर्याय उत्पन्न होती है और पूर्व की विभाव पर्याय का नाश होता है और ध्रुव का आश्रय डमेशा रहता है. दृष्टि में तीन नहीं है, दृष्टि में ध्रुव अक (है). लेकिन दृष्टि ध्रुव पर होने से निर्मल पर्याय उत्पन्न होती है और पूर्व की मलिन पर्याय का व्यय-नाश होता है. आडा..डा..!

जैसे लोडा है, लोडा. लोडा.. लोडा..! काट है ना ? जंग.. जंग. जैसे छैनी मारे, छैनी. छैनी मारने से काट का-जंग का व्यय होता है और अंदर जो प्रकाश है उसकी उत्पत्ति होती है और लोडा तो डमेशा रहता है. आडा..डा..! लोडा होता है ना ? लोडा. उसमें जंग होता है ना ? जंग. डमारी भाषा में काट कहते हैं. जब जंग पर छैनी मारे, छैनी.. छैनी तो जंग के अंश का नाश होता है और लोडा तो सफ़ेद है ना ? स्टील आदि. सफ़ेद पर्याय उत्पन्न होती है, जंग का नाश होता है, लोडस्वरूप तो डमेशा है.

ऐसे भगवानआत्मा ध्रुव पर दृष्टि करने से निर्मल पर्याय उत्पन्न होती है. ध्रुव तो है डी. उसकी अकाग्रता से निर्मल पर्याय उत्पन्न होती है (वड) उत्पाद (हुआ). पूर्व का विभाव है उसका व्यय होता है (वड) व्यय (है). और डमेशा रहनेवाली यीज पर आश्रय है (वड) ध्रुव (है). तीनों वड आ गये. आडा..डा..! समज में आया ? अक सूक्ष्म बात आयी, फिर दूसरी, फिर तीसरी.. इसमें पकडना कैसे ? लोगों को अब्यास नहीं है. सब पाप का अब्यास. दुनिया के सयाने.

प्रश्न :- कमाई करना पाप है ?

उत्तर :- कमाई करना पाप का ढेर है. दवाभाने में विकल्प करना कि, ठसकी दवा, उसकी दवा वड सब पाप है. अरे...! पैसा आया औसा मेरा भाव भी पाप है. मैं कमाया औसी मान्यता भी पाप है और मैंने पर को पैसे दिये तो पैसा मेरा था तो मैंने दिया. मेरा है औसी मान्यता भी पाप है. पैसा तो जड है, तेरा कहां से आया ? आडा..डा..! जगत की यीज बहुत कठिन, बापू !

मुमुक्षु :- ये तो औसा लगता है कि, डम यौबीस घंटे पाप डी करते हैं.

पूज्य गुरुदेवश्री :- पाप डी करते हैं, उसमें क्या ? अभी तक क्या ? पैसा कमाकर पाप किया. फिर वडके को पैसे दिये. पढाई करने को 'अमेरिका' भेजा. उप डजार अर्थ करके. उनके पुत्र को पढाया. अभी तो आठ डजार का पगार है, 'भुंभई' में अक मडिने का आठ डजार का (पगार है). वकालत में पाप किये. सलाह लेने को आते थे तो सबसे रुपया लेते थे. आडा..डा..!

प्रश्न :- वड भी पाप था ?

उत्तर :- अकांत पाप. और ये सब सलाह लेते थे. क्या कडते हैं ? 'गांधीज' के वाईन के. सलाह लेने आते थे, वड भी पाप.

मुमुक्षु :- उसमें तो लोगो का भावा होता है.

पूज्यगुरुदेवश्री :- धूल में भावा होता नहीं. जेल में गये थे. अक मडिना जेल में गये थे. 'गांधीज' की वाईन में सलाह देते थे तो सरकार ने पकडा. आडा..डा..! देश की सेवा करने की सलाह दे वड भी पाप (है).

मुमुक्षु :- भोक्ष की अपेक्षा से पाप है.

पूज्य गुरुदेवश्री :- पाप डी है. वस्तु का स्वरूप डी औसा है.

मुमुक्षु :- लौकिक अपेक्षा से अस्था है, औसा कडते हैं.

पूज्य गुरुदेवश्री :- लौकिक अपेक्षा से पाप है. लोग तो पागल है तो पागल तो अस्था-अस्था कडे. पागल अस्था कडे उस पागल की कीमत क्या ? पागल का.. क्या कडते हैं ? रिपोर्ट ? सर्टिफिकेट. पागल के पास सर्टिफिकेट लेता है, बहुत अस्था है, उसका अर्थ क्या ? दुनिया तो पागल है.

मुमुक्षु :- धंधा के लिये..

पूज्य गुरुदेवश्री :- धंधे के लिये करता है वड पाप. आडा..डा..! पैसा कमाने के लिये राग करता है वड पाप और पैसा देने में पैसा मेरा है, औसा मानकर देना वड पाप (है). और पैसा देने में राग मंड किया डो तो मुजे लाभ हुआ वड भी पाप.

ये तो क्वास है, आडा..डा..! भोक्ष की कॉलेज है. भोक्ष डोने की कॉलेज है. आडा..डा..! आज तो दो भोल डी यवे. आया ना ?

'ध्रुवतत्त्व में अकाग्रता से डी...' पर्याय में अकाग्रता से नहीं. परद्रव्य की लेनदेन पाप है. अपने त्रिकावी ध्रुवतत्त्व में अकाग्रता से डी निर्मल दशा प्रगट होती है उसका नाम धर्म, वीतरागता (है). आनंद, शांति, संतोष, स्वच्छता, प्रभुता औसी निर्मल दशा होती है. और 'विभाव का अभाव होता है.' पूर्व में जो विकार था उसका अभाव होता है. और भाव के आश्रय में निर्मल भाव की पर्याय उत्पन्न होती है. त्रिकावी भाव के आश्रय से निर्मल भाव की उत्पत्ति होती है और मदिन भाव का नाश होता है. वड वस्तु का स्वरूप है, बापू ! उसे थोडा समजना पडेगा. (विशेष कडेंगे...)



પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈનું 'શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર' ગ્રંથ
ઉપરનું પ્રવચન, પ્રવચન - ૪૭,
પત્રાંક-૨૦૧, તા.૧૩-૦૫-૧૯૯૫

'શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર' વચનામૃત, પત્રાંક-૨૦૧. હિન્દીમાં લેના હોગા ?

યહ સોભાગભાઈ પર (લિખા હુઆ) પત્ર છે. સમઝામાં આતા હૈ ગુજરાતી ?

મુમુક્ષુ :- કમ આતી હૈ.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- કમ આતી હૈ.

પત્રકા Heading હૈ 'સર્વથા નિર્વિકાર હોનેપર ભી પરબ્રહ્મ પ્રેમમય પરાભક્તિકે વશ હૈ, ઇસકા જિન્હોને હૃદયમાં અનુભવ ક્રિયા હૈ, ઐસે જ્ઞાનિયોંકી ગુપ્ત શિક્ષા હૈ.' 'સર્વથા નિર્વિકાર હોનેપર ભી પરબ્રહ્મ...' પરબ્રહ્મ માને અપના આત્મા, વહ સર્વથા નિર્વિકાર હૈ, ત્રિકાલ નિર્વિકાર હૈ.

મુમુક્ષુ :- ગુજરાતીમાં 'કેવળ' લખ્યું છે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હાં, હિન્દીમાં 'કેવલ' લિખ સકતે થે. કેવલ નિર્વિકાર હોનેપર ભી પરબ્રહ્મ પ્રેમમય પરાભક્તિકે વશ હૈ. જો ભી જ્ઞાનીપુરુષ હૈં, ઉનકે વશ અપના આત્મા હૈ. પરબ્રહ્મ (સ્વયં) નિર્વિકાર હૈ ઓર વશ હોના વહ તો નિર્વિકાર પદાર્થકી ચેષ્ટા નહીં હૈ. જો નિર્વિકાર હોતે હૈં ઉસકો વશ હોના, વશ કરના વહ બાત તો હોતી નહીં. ફિર ભી જો પરાભક્તિ હૈ, પ્રેમમય પરાભક્તિ હૈ ઉનકો તો સર્વથા નિર્વિકાર આત્મા ભી વશ હોતા હૈ.

'દ્રવ્યદષ્ટિ પ્રકાશ'માં આતા હૈ કિ, દષ્ટિ હૈ વહ દ્રવ્યકા કબ્જા લે લેતી હૈ. (તો) દ્રવ્ય બડા કિ દષ્ટિ બડી ? જિસકે કબ્જે મેં આ જાય વહ તો છોટા હો ગયા ન ? તો (યહ) એક પરિણામન ઓર વસ્તુકે સ્વરૂપકો દિખાનેકી પદ્ધતિ હૈ કિ પરિણામન ક્યા ચીજ હૈ ? વહ દિખાનેકી એક પદ્ધતિ હોતી હૈ.

'ઇસકા જિન્હોને હૃદયમાં અનુભવ ક્રિયા હૈ...' (અર્થાત્) અપને પરિણામનમાં, શ્રદ્ધા-જ્ઞાનમાં અનુભવ ક્રિયા હૈ કિ જો ત્રિકાલ નિર્વિકારી દ્રવ્ય હૈ વહ ભી પ્રેમમય પરાભક્તિકે વશ

હો જાતા હૈ. માને ઉસકે અનુભવમાં વહ આ જાતા હૈ.

મુમુક્ષુ :- પ્રેમમય પરાભક્તિકા....

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- જિસકો ગુણકા પ્રેમ હોતા હૈ ઉસકો ગુણકા નિધાન મિલ જાયે તો કિતના પ્રેમ હોવે - રુચિ હોવે ? ઓર પરાભક્તિ માને કિતના બહુમાન હોવે ? કિ ઐક્યભાવ હો જાતા હૈ. પરાભક્તિ માને ઐક્યભાવ હો જાતા હૈ.

પરાભક્તિકા અર્થ ૨૨૩ (પત્રમાં) લિખા હૈ. દેખો, ૨૨૩માં ક્યા લિખા હૈ ? 'પરમાત્મા ઓર આત્માકા એકરૂપ હો જાના (!) યહ પરાભક્તિકી આખિરી હદ હૈ.' અંતિમ હદ હૈ ઓર ઐસી 'એક યહી લય રહના સો પરાભક્તિ હૈ.' આત્મા માને ? આત્મામય દશા ઉસકો આત્મા કહતે હૈં, અંતરાત્મદશાકો આત્મા કહતે હૈં. જો ભક્તિરૂપ દશા હૈ, જો પ્રેમમય દશા હૈ વહ આત્મા હૈ ઓર પરબ્રહ્મ હૈ વહ પરમાત્મા હૈ. જબ નિર્વિકારી દ્રવ્ય ભી પ્રેમમય પરાભક્તિકો વશ હો જાતા હૈ તો ફિર દૂસરેકી તો મજાલ હી ક્યા ? જો છન્દસ્થ હૈ ઉસકી તો મજાલ હી ક્યા ?

બંબઈમાં ઇસપર સ્વાધ્યાય હુઆ થા. પ્રશ્ન વહ ઉઠાયા થા કિ, અપની આત્મા પર ઐસી પરાભક્તિ કબ આતી હૈ ? ક્યા કિસીકો સીધી-સીધી આતી હૈ ? હમ સીધી આત્માકી ભક્તિ કરકે હમારે પરબ્રહ્મકો વશ કર લે ક્યા ? યહ સંભવ હૈ ક્યા ? ઐસા એક પ્રશ્ન આયા થા. (હમ) બોલે કિ, નહીં, ઐસા નહીં હોતા. પહલે ઐસે પ્રેમમય પરાભક્તિ અપને સત્પુરુષ - સદ્ગુરુકે પ્રતિ આતી હૈ. સત્પુરુષ - સદ્ગુરુ નહીં કહતે હૈં, ઉનકો તો પ્રભુ કહતે હૈં. અપને પ્રભુકે પ્રતિ આતી હૈ ઓર પહલે પ્રભુ વશ હોતે હૈં, વે પ્રભુ વશ હોતે હૈં. ફિર યહ અપના પરમાત્મા-પ્રભુ હૈ વહ વશ હોતા હૈ. કેસેટમાં વહ બાત આવી હૈ ? પ્રશ્ન વહ ઉઠા થા. ક્યોંકિ જો આગેકી અવસ્થા હૈ વહ અપેક્ષિત

હે. આગેકી અવસ્થા હે વહ અપેક્ષિત હે.

એસે જ્ઞાનિયોંકી યહ ગુપ્ત શિક્ષા હે માને કૌનસી શિક્ષા ગુપ્ત શિક્ષા હે ? કિસ પ્રકારકી ગુપ્ત શિક્ષા હે ? કિ પરમાત્માકો વશ કરના હો તો પ્રેમમય પરાભક્તિ આયેગી તો વશ હોગા. ચાહે સદ્ગુરુ પરમાત્મા હો, ચાહે અપના પરમાત્મા હો. માર્ગ એક હી હે, દૂસરા માર્ગ નહીં હે. યહ કહનેકા અભિપ્રાય હે. યહ ગુપ્ત શિક્ષા હે માને યહ બોધ હે, એસા બોધ ઉસને અનુભવ કરકે લિખા, ઇસ બોધકો અપના અનુભવકરકે લિખા હે.

મુમુક્ષુ :- સોગાનીજી સાહબને અર્થ ચઢાયા, યહ પરાભક્તિ કી !

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હાં, યહાં તો દિગંબર સંપ્રદાયમેં કોઈ જ્ઞાનીકો અર્થ ચઢાવે તો લોગોંકો પસીના આ જાતા હે. તો ક્યા સોગાનીજી દિગંબર નહીં થે ક્યા ?

મુમુક્ષુ :- અષ્ટદ્રવ્યસે ઉન્હોંને પૂજા કી, કિતની પરાભક્તિ !

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- અભી મિલે નહીં થે, આત્મધર્મ દેખ કરકે, આત્મધર્મમેં જો ફોટો આયા ઉસપર (અર્થ) ચઢાયા. અભી વિદ્વાનોં કો, પંડિતોંકો પૂછો તો કહેંગે (કિ), ગૃહીત મિથ્યાત્વ હો જાયેગા. ક્યા બોલેગા ? કિ યહ તો ગૃહીત મિથ્યાત્વ હો જાયેગા, જબકિ ઉનકો બાદમેં સમ્યક્ત્વ હુઆ. એસી ભક્તિ કરનેસે તો મિથ્યાત્વ મિટકરકે સમ્યક્ હુઆ.

મુમુક્ષુ :- શાસ્ત્રમેં એસે પ્રસંગ તો આતે નહીં, સહજ એસા ભાવ ઉઠ જાતા હે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- જો અંદરમેંસે આતા હે, જો આત્મામેંસે આતા હે વહી શાસ્ત્ર હે. શાસ્ત્ર નિકલે કહાંસે ? શાસ્ત્ર જ્ઞાનિયોંકે અંતરમેંસે, આત્મામેંસે તો નિકલે હેં તો જો આત્મામેંસે નિકલા વહી શાસ્ત્ર હે. દૂસરા શાસ્ત્ર કહાં હૂંઢનેકો જાના હે ?

હમને આગ્રામેં વહ શાસ્ત્રમેંસે દિખાયા. આગ્રામેં વહ પ્રશ્ન કિસીને ઉઠાયા કિ, ઉનકે સામને બાત આતી હે તો ‘કાર્તિકેયાનુપ્રેક્ષા’ ! ‘કાર્તિકેયાનુપ્રેક્ષા’ હે ન ! કૌનસી ગાથા હે ? ૩૬૧-૩૬૨ ગાથા થી ન ? ૩૨૪-૩૨૬ ગાથા હે. ઉસમેં વહ બાત હે. (વહાં) પાત્રદાનકા અધિકાર ચલા હે કિ, જ્ઞાની ભી પાત્રકો દાન દેતે હેં. પાત્ર ત્રીન પ્રકારકે હોતે

હેં ઔર દાન ચાર પ્રકારકે હોતે હેં. ત્રીન પ્રકારકે પાત્રમેં ઉત્કૃષ્ટ પાત્ર મુનિરાજ હેં, મધ્યમ પાત્ર હે પંચમગુણસ્થાનવર્તી શ્રાવક ઔર જઘન્ય પાત્ર હેં અવિરત સમ્યગ્દષ્ટિ. ઔર દાન ચાર પ્રકારકે હેં - આહારદાન, અભયદાન, શાસ્ત્રદાન ઔર ઔષધદાન. આહારદાનકે પ્રસંગકી બાત વહાં ચલી હે કિ ત્રીનોં પ્રકારકે પાત્રકો નવધાભક્તિપૂર્વક આહારદાન દિયા જાતા હે. નવધાભક્તિમેં કૌનસી ભક્તિ બાકી રહી ? નૌકી નૌ આ જાતી હે. અષ્ટદ્રવ્યકી પૂજા ભી આ જાતી હે.

મુમુક્ષુ :- વહાં એક વિશેષતા ઔર હે કિ, અધિકાર ચલા હે પંચમગુણસ્થાનવર્તીકા ઔર પંચમગુણસ્થાનવર્તી ત્રીન પ્રકારકે પાત્રકો દાન દેતે હેં, જઘન્યકો પંચમગુણસ્થાનવાલા ભી યથાયોગ્ય ભક્તિ કરકે આહારદાન દેતા હે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હાં, દેતા હે ન ! દેતા હે.

મુમુક્ષુ :- યહ એક વિશેષતા હુઈ ન ! પંચમગુણસ્થાનવાલા ચૌથે ગુણસ્થાનવાલેકો આહારદાન દેતા હે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- જબ ગુરુ શિષ્યકા આદર કરતા હે તો વહ બાત કહાં રહતી હે ? ઔર જ્ઞાની મુમુક્ષુકા આદર નહીં કરતે ક્યા ? જ્ઞાની હો વે ઉત્કૃષ્ટ મુમુક્ષુકા આદર નહીં કરતે ક્યા ? (સોભાગભાઈ) અજ્ઞાની હે ફિર ભી (ઉનકા) ચરણસ્પર્શ લિખા હે. ઇસમેં હી પીછે આયેગા, ઇસમેં નીચે હી આયેગા. શુરમેં આતા હે.

‘ચહાં પરમાનંદ હે. અસંગવૃત્તિ હોનસે સમુદાયમેં રહના બહુત વિકટ હે. જિસકા યથાર્થ આનંદ કિસી ભી પ્રકારસે નહીં કહા જા સકતા, એસા સત્સ્વરૂપ જિનકે હૃદયમેં પ્રકાશિત હુઆ હે, ઉન મહાભાગ્ય જ્ઞાનિયોંકી ઔર આપકી હમપર કૃપા રહે.’ સોભાગભાઈકો લિખા હે, આપકી હમપર કૃપા રહે.

આમાં સંસ્કૃત ટીકા નથી ને ? સંસ્કૃત ટીકામાં છે, આમાં નથી. સંસ્કૃત ટીકા છે ને એમાં છે. છે આમાં પણ છે. ૩૬૧નો અર્થ. ‘અતિથિસંવિભાગ નામનું ત્રીજું શિક્ષાવ્રત કહે છે.’ ‘શિક્ષાવ્રતં ચ તૃતીયં તસ્ય ભવેત્ સર્વસૌખ્યસિદ્ધિકરં દાનં ચતુર્વિધં અપિ ચ સર્વાદાનાનાં સારકરં’ (૩૬૧) જે જ્ઞાનીશ્રાવક ઉત્તમ, મધ્યમ, જઘન્ય ત્રણ પ્રકારના પાત્રોને અર્થે દાતારના શ્રદ્ધાઆદિ ગુણોથી યુક્ત બની પોતાના

હાથથી નવધાભક્તિ સહિત થઈને દરરોજ દાન આપે છે તે શ્રાવકનું ત્રીજું અતિથિસંવિભાગશિક્ષાવ્રત છે. એ દાન કેવું છે ? આહાર, અભય, ઔષધ અને શાસ્ત્રદાનના ભેદથી ચાર પ્રકારનું છે. વળી અન્ય જે લૌકિક ધનાદિના દાન કરતા આ દાન અતિશય સારરૂપ ઉત્તમ છે, સર્વ સિદ્ધિ સુખનું ઊપજાવવાવાળું છે.

ભાવાર્થ : ત્રણ પ્રકારનાં પાત્રોમાં ઉત્કૃષ્ટ તો મુનિ, મધ્યમ અણુવ્રતી શ્રાવક તથા જઘન્ય અવિરતસમ્યગ્દષ્ટિ છે. વળી દાતારના શ્રદ્ધા, તુષ્ટિ, ભક્તિ, વિજ્ઞાન, અલુબ્ધતા, ક્ષમા અને શક્તિ એ સાત ગુણો છે. વળી અન્ય પ્રકાર આ પ્રમાણે પણ છે.' એ તો ભાવાર્થમાં પછી એનું એ લીધું છે. 'વળી પ્રતિગ્રહ, ઉચ્ચસ્થાન, પાદપ્રક્ષાલન, પૂજન, પ્રણામ, મનશુદ્ધિ, વચનશુદ્ધિ, કાયશુદ્ધિ તથા આહારશુદ્ધિ એ પ્રમાણે નવધાભક્તિ છે. એ રીતે દાતારના ગુણોસહિત નવધાભક્તિપૂર્વક પાત્રને રોજ ચાર પ્રકારનાં દાન જે આપે છે,...' જુઓ ! આ દાતારના સાત ગુણો અને નવધાભક્તિ સંબંધી વિશેષ વર્ણન 'રત્નકરંડ શ્રાવકાચાર' શ્લોક ૧૧૩ કે 'રોજ ચાર પ્રકારના દાન જે આપે છે તેને ત્રીજું શિક્ષાવ્રત હોય છે.

મુમુક્ષુ :- એને શિક્ષાવ્રત હોય છે એટલે એ પંચમ ગુણસ્થાનવર્તી થઈ ગયા ને ! તો આ પ્રવૃત્તિરૂપ ક્રિયા છે, ખાલી અભિપ્રાયની વાત નથી.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- રોજ આપે છે ઈ વાત છે, આપે છે ઈ વાત છે.

મુમુક્ષુ :- યહ દ્રવ્યરૂપ સે હૈ.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હાં, લિખા હૈ, વિસ્તાર ક્રિયા હૈ - નવધાભક્તિકા વિસ્તાર ભી ક્રિયા હૈ. ઔર વહાં તો સંસ્કૃત ટીકામેં વહ બાત Original મેં લિખી હૈ, વહ બાત સંસ્કૃતમેં લિખી હૈ.

ઇસમેં ક્યા હૈ ? ધર્મકા બહુમાન હૈ. ધર્મકા બહુમાન (હૈ), વહ ધર્મકા બહુમાન હૈ. હમ સમ્યગ્દર્શનકી પૂજા કરે, અષ્ટદ્રવ્યસે કરતે હૈં કિ નહીં કરતે હૈં ? તો સમ્યગ્દર્શન બિના સમ્યગ્દષ્ટિ કહાં પાયા જાતા હૈ ? યહ બતાઓ. મુનિ ઔર ભગવાનમેં સમ્યગ્દર્શન હૈ ઇસકી પૂજા કરે ઔર અવિરત સમ્યગ્દષ્ટિમેં સમ્યગ્દર્શન હૈ ઇસકી પૂજા નહીં કરે, ઐસા હો સકતા હૈ ક્યા ? વહ હાસ્યાસ્પદ બાત હૈ.

પર્વકે દિનોમેં - દસ લક્ષણ પર્વમેં તેરસકો સમ્યગ્દર્શનકી પૂજા કરતે હૈં, ચૌદસકો સમ્યગ્જ્ઞાનકી પૂજા કરતે હૈં, (ફિર) ચારિત્રકી પૂજા કરતે હૈં, તો સમ્યગ્દર્શનકી આઠ દ્રવ્યસે પૂજા કરે ઔર સમ્યગ્દષ્ટિકી નહીં કરે ! તો સમ્યગ્દર્શન તો ઇસકી પર્યાય હૈ ઔર સમ્યગ્દષ્ટિ તો ઉસ પર્યાયકા ધની હૈ, તો ધની બડા કિ ઇસકી પર્યાય બડી ? 'ન ધર્મોઃ ધાર્મિકેય બિના'. વૈસી બાત હૈ.

આત્મા ઔર પરમાત્માકા ઐક્ય હો જાના, પરાભક્તિમેં ક્યા હૈ ? દોપના નહીં રહના. કુછ અંતર નહીં રહના. અપનેરૂપ, સર્વસ્વરૂપ અનુભવ કરના ઔર એક લયસે અનુભવ કરના, કભી હો ઔર કભી નહીં હો ઐસી બાત નહીં. કભી વિરુદ્ધ હો ઔર કભી અવિરુદ્ધ હો ઐસી ભી બાત નહીં. ઉસકો પરાભક્તિ કહનેમેં આવી હૈ. વહ પ્રશ્ન વહાં ચલા થા. ઇસલિયે વહાં વહ બાત ખોલી થી કિ, બીચમેં એક ઐસી સ્થિતિ આતી હૈ, આયે બિના રહતી નહીં, બાદમેં યહ સ્થિતિ આતી હૈ. ઉસ સ્થિતિ(મેં) નહીં આયે ઔર યહ સ્થિતિ આયે ઐસા ભી બનતા નહીં હૈ.

અબ પત્ર શુરૂ હોતા હૈ કિ, 'યહાં પરમાનંદ હૈ.' યહાં પરમાનંદ હૈ, હમકો પરમ આનંદ હૈ. 'અસંગવૃત્તિ હોનેસે સમુદાયમેં રહના બહુત વિકટ હૈ.' હમારી અસંગવૃત્તિ હો ગઈ હૈ ઇસલિયે લોગોંકે બીચમેં રહના હમકો સુહાતા નહીં હૈ, બિલકુલ સુહાતા નહીં હૈ. કિસીસે બોલના, બાત કરના, કુછ વ્યવહાર કરના હમકો સુહાતા નહીં હૈ.

મુમુક્ષુ :- માહ મહિનાનો પત્ર છે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હાં, સમ્યગ્દર્શન(કો) હુએ ચાર મહીને હુએ હૈં, ચાર મહીનેકી બાત હૈ. કિતની અસંગવૃત્તિ હો ગયી હૈ ! કિસી સમુદાયકે સાથ હમકો બિલકુલ સુહાતા નહીં હૈ.

'જિસકા યથાર્થ આનંદ કિસી ભી પ્રકારસે નહીં કહા જા સકતા, ઐસા સત્સ્વરૂપ જિનકે હૃદયમેં પ્રકાશિત હુઆ હૈ,..' જ્ઞાનિયોંકે વિશેષણકે લિયે એક પૂરા વાક્ય લિખા હૈ 'ઉન મહાભાગ્ય જ્ઞાનિયોંકી ઔર આપકી હમપર કૃપા રહે.' જ્ઞાનીકી હમારે પર કૃપા હો ઐસી સાદી બાત નહીં લિખા કિ જ્ઞાનીકી ભી હમારે પર કૃપા હો. જ્ઞાની કેસે હોતે હૈં ? કિ જિસકા યથાર્થ આનંદ કિસી ભી પ્રકારસે કહા નહીં જા સકતા, ઐસા સત્સ્વરૂપ જિનકે હૃદયમેં પ્રકાશિત હુઆ હૈ.

आनंदमय परिश्रमन जिसका हुआ है, जैसे मछलानियोंकी हमारे पर कृपा हो, कृपा रहे और आपकी भी हमारे पर कृपा रहे. ठीक !

शिष्य तो गुरुको कहे कि, हे गुरु ! आपकी हमारे पर कृपा रहे, लेकिन यहाँ गुरु शिष्यको कहेते हैं. कैसी बात होगी ? शिष्य भी कैसा होगा ? जिस गुरुको अपने शिष्य पर इतना बहुमान आये वह शिष्य कैसा होगा ? ऐसा क्यों ? एक बहुत मार्मिक बात धर है कि, यह ज्ञानी गुरु अपने शिष्यके लिये ऐसा क्यों कहेते हैं ? कृपा रहे, ऐसी बात कैसे करते हैं ? कि, वास्तवमें उनको भी आत्मलाभ होता है. सत्संगमें, जैसे पात्र सत्संगमें उनको भी आत्मलाभ होता है. उनका हृदय - आत्मा अंदरसे उजागर होता है, आविर्भावको प्राप्त होता है. शिष्यके साथ सत्संग करनेसे, जैसे पात्र शिष्य होते हैं कि उनके साथ सत्संग करनेसे अपनेको अपना आत्मभाव आविर्भाव होने लगता है. तो जैसे गुरुसे होता है वैसे शिष्यसे होने लगा तो गुरु भी शर्म रभेंगे नहीं कि यह शिष्य है, मुझे नहीं भोवना चाहिये - ऐसा नहीं कहेंगे. मान-अपमान जैसा होता ही नहीं, मोक्षमार्गमें मान-अपमान जैसा कुछ होता ही नहीं है. (कहेते हैं) आपकी हमारे पर कृपा रहे.

'हम तो आपकी चरझरज हैं;...' क्या विधा है ? शिष्यको विधते हैं, हम तो आपकी चरझरज हैं. यह पत्र तो ज्ञानदशा होनेके बाद विधते हैं और सोत्सागत्वाइकी अभी ज्ञानदशा लुयी नहीं है. आगे, कभी-कभी ठपका भी दिया है, वह भी अधिकार है और इतनी स्तुति भी की है. तो क्या है कि, दोनोंके बीचमें कोई अंतर नहीं है. कुछ भी कह सकते हैं. यह प्रेमसे भगवानको तू कहेते हैं कि नहीं कहेते हैं ? जब भगवानकी भक्ति करते हैं तो बहुमान तो कितना है ? साक्षात् परमात्मा है उनका बहुमान होनेमें कोई कसर होनेका तो सवाल नहीं है. लेकिन भक्ति करेंगे तो क्या कहेंगे ? तू ऐसा है और तू ऐसा है. कहेगा कि नहीं कहेगा ? तो आपमेंसे तू कहांसे हो गया ? जैसे प्रेमभक्ति आती है.

'हम तो आपकी चरझरज हैं; और त्रिकाल इसी प्रेमकी निरंजनदेवसे याचना है.' कि हमारा प्रेम ऐसा बना रहे, आपके साथ जैसा प्रेम है, ऐसा ही प्रेम बना रहे,

ऐसी हमारी याचना है. हमको और कुछ चाहिये नहीं. प्रश्न :- निरंजनदेव अटवे ?

समाधान :- अपना आत्मा, अपने आत्माके प्रति याचना करते हैं कि तुम ऐसा ही परिश्रमन किया करो और कुछ नहीं चाहिये.

मुमुक्षु :- रागनो मलावो करवानो ने !

पूज्य भाईश्री :- राग दूसरी वस्तु है, प्रेम दूसरी वस्तु है. दोनों एक बात नहीं है. राग अलग चीज है. राग होता है वह कभी उठ जाता है तो रागका स्थान कौन लेता है ? द्वेष ले लेता है. जबकि निर्मल प्रेम होता है वहां ऐसा होता नहीं है. वह कभी उठता नहीं, मिटता नहीं. दिनदुगना और रात यौगुना हो जायेगा, ऐसा बनता है. दोनोंका आधार अलग-अलग है. रागका आधार पुद्गल है और प्रेमका आधार चैतन्य है.

मुमुक्षु :- देवलालीमें आपने लिया था, आत्मा प्रेमकी मूर्ति है.

पूज्य भाईश्री :- अनंत प्रेमकी मूर्ति है. (अंभईमें) स्वाध्याय यला वहां वह बात ली थी कि, जैसे आत्मा ज्ञान और आनंदकी मूर्ति है जैसे आत्मा अनंत प्रेमकी मूर्ति है. आत्मिक प्रेम जब उमडता है तो वह बात कोई अलग हो जाती है. अन्यमतमें तो ऐसा कहेते हैं कि, भगवानको भक्तके वश रहना पडता है, क्या है ? भगवानको (भक्तके वश रहना पडता है). तो यहां भी ऐसी बात ली कि, यह जो सर्वथा निर्विकार परब्रह्म है न ? वह भी पराभक्तिके वश होते हैं, वह भी इसके वशमें आ जाते हैं. ऐसी उसमें ताकत है ! तो इसका मतलब क्या हुआ ? कि, पर्यायकी मडिमा कितनी है वह दिजानेकी बात है कि, फिर वह परमब्रह्म अलग रह सकता नहीं है. वह परब्रह्म अलग नहीं रह सकता. अनन्यभाव हो जायेगा, अन्यभाव रहेगा नहीं.

मुमुक्षु :- आत्माको ज्ञानकी प्रधानता रहती है, और आपने एक बार कहा था कि, ज्ञानसे विभुषित आत्मा है, अनंत ज्ञान की मूर्ति है. वैसे ही प्रेम की मूर्ति है.

पूज्य भाईश्री :- सर्वज्ञस्वभावी है, इसलिये सर्व ज्ञानकी उसकी वृत्ति रहेगी, जैसे सुषस्वभाव है तो सुषकी वृत्ति रहेगी. आनंदस्वभाव है, शांतस्वभाव है तो सबकी

વૃત્તિ રહેગી, એસે પ્રેમસ્વભાવ હે.

મુમુક્ષુ :- તો પ્રેમકી વૃત્તિ રહેગી.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- રહેગી હી રહેગી, કહીં ન કહીં તો કરેગા. અન્ય દ્રવ્યસે કરેગા તો રાગ હો જાયેગા. પુદ્ગલસે કરેગા તો રાગ હો જાયેગા ઔર ચૈતન્યસે કરે તો પ્રેમ હો જાયેગા. અપને પ્રભુસે કરતા હે વહ ચૈતન્યસે કરતા હે. પરમાત્મા, સંત-સત્યુરુષ ઔર આત્મા તીનોંમેં કોઈ ભેદ નહીં હે. એક જગહ લિખા હે, તીનોંમેં કોઈ અંતર નહીં હે. વહ સ્વ હે ઔર વહ પર હે, યહાં વહ બાત નહીં હે.

પ્રશ્ન :- મુમુક્ષુમેં એસી પાત્રતા, ઇસકી વજહ ક્યા ?

સમાધાન :- યોગ્યતા, સર્વોત્કૃષ્ટ યોગ્યતા હે. મુમુક્ષુતામેં યહ સર્વોત્કૃષ્ટ યોગ્યતા હે.

પ્રશ્ન :- કિસ વજહસે આતી હે ?

સમાધાન :- કિસ વજહસે ક્યા ? ગુણકા પ્રેમ હે, ઇસકા સ્વભાવ હે. વજહ ક્યા હે ? વજહ હે ઇસકા સ્વભાવ, વજહ હે અપના સ્વભાવ. અપને સ્વભાવકી વજહસે આતી હે. દૂસરા કોઈ કારણ નહીં હે. સ્વભાવમેંસે નિકલી હુઈ વહ સ્વભાવિક પર્યાય હે, વહ સ્વભાવપર્યાય હે, વિભાવપર્યાય નહીં હે.

મુમુક્ષુ :- પ્રેમકી ચાહત પ્રેમસ્વભાવકો વ્યક્ત કરતી હે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હાં, સ્વભાવકો વ્યક્ત કરતી હે.

‘કેવળ નિર્વિકાર છતાં પરબ્રહ્મ પ્રેમમય પરાભક્તિને વશ છે, એ હૃદયમાં જેણે અનુભવ કર્યો છે એવા જ્ઞાનીઓની ગુપ્ત શિક્ષા છે.’

‘અત્ર પરમાનંદ છે. અસંગવૃત્તિ હોવાથી સમુદાયમાં રહેવું બહુ વિકટ છે. જેનો કોઈ પણ પ્રકારે યથાર્થ આનંદ કહી શકાતો નથી, એવું જે સત્સ્વરૂપ તે જેના હૃદયમાં પ્રકાશ્યું છે એવા મહાભાગ્ય જ્ઞાનીઓની અને આપની અમારા ઉપર કૃપા વર્તો.’

આમાં તો વાંધો પડ્યો હતો. શરૂઆતમાં આ લોકોએ થોડા ફેરફાર કર્યા છે. Original નથી છાપ્યો. પછી કૃપાળુદેવના મુમુક્ષુઓમાં અંદરો અંદર (વાત થઈ) કે આ આપણો અધિકાર નથી. આપણને ગમે - ન ગમે આપણે કાઢી નાખીએ (એ બરાબર નથી). પોપટલાલભાઈએ વાંધો ઉઠાવ્યો હતો અને એ બહુ વિચારક હતા. આમાં શું છે

કે, આ કામ મનસુખભાઈ, એમના (કૃપાળુદેવના) નાનાભાઈએ કર્યું છે, અંબાલાલભાઈ સાથે હતા કે નહીં ? બીજા મનસુખભાઈ કીરતચંદ. પ્રકાશક મનસુખલાલ રવજીભાઈ મહેતા, એ જે પહેલી આવૃત્તિ છે ને ! ‘સંશોધક’ શબ્દ વાપર્યો છે, સંશોધક મનસુખલાલ રવજીભાઈ મહેતા. આમાં ફેરફાર છે. આ છેલ્લા મોટા ગ્રંથમાં Original લીધું છે, Word to word. કોઈ પણ જાતના ફેરફાર વગર. એ મૂળ પોપટલાલ મોહકમચંદભાઈએ કીધું કે આ આપણે ન કરી શકાય. જ્ઞાનીપુરુષની વાતમાં ફેરફાર આપણે ન કરવો જોઈએ અને ન કરી શકાય. ઈ વિચારક હતા. ઘણા તો એમ કહે છે કે એ પાછળથી પામી ગયા હતા પણ વિચારક તો ઘણા હતા એ વાત તો એમની ડાયરી ઈડરમાં જોઈ હતી. ઈડરમાં એમની હસ્તલિખિત ડાયરી જોઈ હતી. સોળસો વચનો હતા, કેટલા ? સોળસો વચનો હતા. ઘણી વાતો સારી લાખી હતી. કેટલીક વાતો તો અંતર વિચારમાંથી આવી હોય એવું પ્રતીત થાય. બહુ સારી યોગ્યતા હશે, બહુ ઊંડા વિચારક હશે એ વાત તો ચોક્કસ છે.

જુઓ ! એમને પણ કેવું થયેલું ? ૧૯૪૪માં એ કૃપાળુદેવના પ્રથમ પરિચયમાં આવ્યા અને ઉપરથી ગયું, ઓળખી ન શક્યા, કિંમત ન આવી. દસ વરસ નીકળી ગયા, ૧૯૫૪માં ફરીને પરિચયમાં આવ્યા પછી કિંમત આવી, પછી ચોંટી પડ્યા, પછી વળગી રહ્યા અને ઘણો ફાયદો થયો. વળગી રહ્યા અને ફાયદો પણ ઘણો થયો. પછી એમણે ૧૯૬૮માં વડવામાં આશ્રમ કર્યો. દસ વરસ પછી વડવાનો પહેલો આશ્રમ એમણે કર્યો. એ વડવાના આશ્રમના આદ્યસ્થાપક પોપટલાલભાઈ છે.

મુમુક્ષુ :- ત્યાં શ્વેતાંબર મંદિર છે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હા, શ્વેતાંબર-દિગંબરનો ભેદ તો એ લોકોને કોઈને હજી પણ ખ્યાલમાં આવતો નથી, મોટા ભાગનાને ખ્યાલમાં નથી આવતો. કેટલાક કેટલાક જે ગુરુદેવનું સાહિત્ય વાંચીને જે ગુરુદેવ બાજુ વળ્યા એ લોકોમાં ફેરફાર થઈ ગયો. જેમકે આ કોબા આશ્રમ છે, ત્યાં દિગંબર પ્રતિમા છે. એમાં અમુક અમુકમાં ફેરફાર થયો છે. કોબા બાજુ જે વળ્યા એ બધાયને ખ્યાલ આવી ગયો કે દિગંબર સત્ય છે. દિગંબર સાહિત્ય પણ બધા વાંચતા થઈ ગયા. માન્યતા સૌની સ્વતંત્ર છે. આપણે તો પ્રત્યક્ષ ગુરુદેવે ૪૫

વરસ સુધી પ્રવચનો આપ્યા પછી બધાયની માન્યતા ભિન્ન ભિન્ન છે કે નહીં ? આપણે ત્યાં ભિન્ન ભિન્ન વિચારો અને ભિન્ન ભિન્ન માન્યતા થઈ ગઈ કે નહીં ?

‘આજકે પ્રભાતસે નિરંજનદેવકા કોઈ અદ્ભુત અનુગ્રહ પ્રકાશિત હુઆ હૈ;...’ પ્રભાત એટલે વહેલું પરોઢિયું, વહેલી સવારથી નિરંજનદેવ હમારા આત્મા, ઉસકા કોઈ અદ્ભુત અનુગ્રહ પ્રકાશિત હુઆ હૈ. યાની ઉસકી કૃપા હુઈ, નિર્વિકલ્પદશા બહુત અચ્છી આયી. નિર્વિકલ્પ શુદ્ધોપયોગકી દશા બહુત અચ્છી આયી. ‘આજ બહુત દિનોંસે ઈસ્થિત પરાભક્તિ કિસી અનુપમ રૂપમેં ઉદિત હુઈ હૈ.’ આત્મા ઔર પરમાત્માકા એક્ય હો જાના, નિર્વિકલ્પ શુદ્ધોપયોગ હો જાના વહી પરાભક્તિ હૈ. બહુત દિનોંસે ઈચ્છા રખતે થે એસી પરાભક્તિ કિસી અનુપમ રૂપમેં ઉદિત હુઈ હૈ.

પરાભક્તિ દિખાનેકે લિયે ‘શ્રીમદ્ ભાગવત્’કા એક દષ્ટાંત દિયા હૈ. ‘શ્રીમદ્ ભાગવત્’મેં એસી એક કથા હૈ. ‘શ્રીમદ્ ભાગવત્’મેં એસી એક કથા હૈ કિ, ‘ગોપિયાં ભગવાન વાસુદેવ (કૃષ્ણચંદ્ર)કો દહીકી મટકીમેં રખકર બેચને નિકલી થી...’ ભગવાનકો બેચને નિકલી થી ! દહીકી મટકીમેં તો દહી થા લેકિન વે ભૂલ ગઈ, વે ભગવાનકો બેચને નિકલ ગઈ. યહ દહીકી મટકી હૈ ‘વહ પ્રસંગ આજ બહુત યાદ આ રહા હૈ.’ વહ પ્રસંગ હમકો આજ બહુત યાદ આ રહા હૈ.

ઇસમેં ક્યા હુઆ હૈ કિ, લય લગી હૈ, હમકો હમારે પરિણામમેં હમારે પરમાત્માકી લય લાગી હૈ. દૂસરા કુછ હમકો દિખતા નહીં હૈ. વહ અન્યમતમેં આતા હૈ કિ, પરમાત્મા સર્વવ્યાપક હૈ. ‘ઘાસ, ચાસ નહિ પાસ પણ વિશ્વપતિનો વાસ’ કવિતા આવતી હતી ને ? વહ બાત દૂસરે પ્રકારસે હૈ. જબ અપને પરમાત્માકે પ્રતિ ઉતના પ્રેમ આતા હૈ તો હરજગહ વહી દિખતા હૈ. જહાં દેખો વહાં વહી દિખતા હૈ, દૂસરા કુછ દિખતા નહીં હૈ. તો જૈસે હરજગહ વ્યાપ્યવ્યાપક હો ગયા, વાસ્તવમેં વ્યાપતા નહીં, વહ તો અપની દષ્ટિ એસી હૈ. વહી Visualise હોતા રહતા હૈ.

મુમુક્ષુ :- કણ-કણમેં ભગવાન હૈ, એસી જો માન્યતા હૈ વહ ઈસી ન્યાયસે હૈ.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હાં, ઉસી ન્યાયસે હૈ. વહ ભી પદ આતા હૈ દેખો, ‘હું તો હાલું ચાલું ને પ્રભુ સાંભરે રે, મને ખાતા, પીતા, બોલતા, ઊંઘતા પ્રભુ-હરિ સાંભરે

રે’ એ જ દશા થઈ જાય છે.

મુમુક્ષુ :- રાજકોટવાળા મુમુક્ષુભાઈ કહેતા હતા કે, શ્રીમદ્ મારી સાથે જ ચાલે છે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હાં, વહ આયે થે ન ! એસી બાત હૈ.

‘ગોપિયાં ભગવાન વાસુદેવ (કૃષ્ણચંદ્ર)કો દહીકી મટકીમેં રખકર બેચને નિકલી થી એસી શ્રીમદ્ ભાગવત્મેં એક કથા હૈ; વહ પ્રસંગ આજ બહુત યાદ આ રહા હૈ. જહાં અમૃત બહતા હૈ...’ ક્યા ? પરાભક્તિમેં ક્યા આતા હૈ ? અમૃત બહતા હૈ ‘વહાં સહસ્ત્રદલ કમલ હૈ, યહ દહીકી મટકી હૈ; ઔર આદિપુરુષ ઉસમેં બિરાજમાન હૈ વહ ભગવાન વાસુદેવ હૈ.’ એસી ભાગવત્મેં વહ સબ બાર્તે આતી હૈં.

‘ઉસકી પ્રાપ્તિ સત્પુરુષકી ચિત્તવૃત્તિરૂપ ગોપીકો હોનેપર...’ અબ ક્યા હૈ ? એસે અપને પરમાત્માકી પ્રાપ્તિ, જો જ્ઞાનીપુરુષ હૈં ઉનકી ચિત્તવૃત્તિરૂપ ગોપી હૈ, ઉસકી ચિત્તવૃત્તિ હૈ વહ ગોપી હૈ. વહ ‘ગોપીકો હોનેપર વહ ઉલ્લાસમેં આકર...’ વહ ક્યા હૈ ? જ્ઞાની ઉલ્લાસમેં આ જાતે હૈં ઔર ‘દૂસરે મુમુક્ષુ આત્માકે પ્રતિ એસા કહતી હૈ – ‘કોઈ માધવ લો, હોરે કોઈ માધવ લો.’ ગુજરાતીમાં એને મહી કહે છે, ગુજરાતીમાં એને દહીં પણ કહે છે અને સાહિત્યની ભાષામાં એને મહી કહે છે. મહીકી મટકી, મહી માને દહીં. તો મહી(મેં) ‘મ’ શબ્દ આગે હૈ તો વહાં માધવમેં ‘મ’ શબ્દ આગે હૈ. તો મહીકા શબ્દ બદલકરકે માધવ હો ગયા. ‘કોઈ માધવ લ્યો, કોઈ માધવ લ્યો...’ ઠીક !

મુમુક્ષુ :- મુમુક્ષુકો જ્ઞાની એસે પ્રેરણા કરતે હૈં, દેતે હૈં.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હાં, યહ ભક્તિકા પત્ર સોભાગભાઈકો લિખા હૈ. સોભાગ્યભાઈકો એસી અનન્ય ભક્તિ થી ન ! ઈસલિયે (લિખા હૈ). સોભાગભાઈ આગે પૂછતે હૈં કિ, આપને વહ ભાગવત્વાલી બાત કહાંસે કહી ? વહ ભાગવત્વાલી બાત આપસે સુનકર હમકો બહુત હર્ષ આયા. ક્યોંકિ ઉસકે અંતર પરિણામ ઔર વહ સબ બાત મેલ ખાતે થે તો ઉનકો પરમ હર્ષ આયા કિ યહ બાત આપને કહાંસે કહી ? ક્યોંકિ વહ ભી હમારે અનુભવકા વિષય હૈ, આજ જો તુમહારે અનુભવકા વિષય હૈ વહી હમારે

અનુભવકા વિષય છે. હમારે આત્મજ્ઞાનસે, હમારે અનુભવસે વહ બાત હમને કહી છે. હમકો ભી ઐસા અનુભવ હુઆ થા, ઇસલિયે હમને ઐસી બાત કહી છે.

મુમુક્ષુ :- ૧૫૨ પત્રમેં...

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- 'આજ આપકા કૃપા પત્ર મિલા. સાથમેં પદ મિલા. સર્વાર્થસિદ્ધકી હી બાત છે.' કોને લખેલો પત્ર છે ? સોભાગભાઈને ! 'જૈનમેં ઐસા કહા છે કિ સર્વાર્થસિદ્ધ મહાવિમાનકી ધ્વજાસે બારહ યોજન દૂર મુક્તિશિલા છે. કબીર ભી ધ્વજાસે આનન્દવિભોર હો ગયે હૈં. ઉસ પદકો પઢકર પરમાન્દ હુઆ. પ્રભાતમેં જલ્દી ઉઠા,...' આસો સુદી અગિયારસ છે. 'પ્રભાતમેં જલ્દી ઉઠા, તબસે કોઈ અપૂર્વ આનન્દ રહા હી કરતા થા. ઇતનેમેં પદ મિલા;...' આપકા પદવાલા પત્ર મિલા. 'ઐર મૂલપદકા અતિશય સ્મરણ હો આયા,...' હમારે આત્મપદકા અતિશય સ્મરણ હો આયા.

'એકતાન હો ગયા.' ઇસમેં એકતાન હો ગયે. 'એકાકાર વૃત્તિકા વર્ણન શબ્દસે કેસે ક્રિયા જા સકતા છે. દિનકે બારહ બજે તક રહા.' સુબહસે લેકરકે (બારહ બજે તક રહા). 'અપૂર્વ આનન્દ તો વૈસાકા વૈસા હી છે. પરન્તુ દૂસરી વાર્તા કરનેમેં ઉસકે બાદકા કાલક્ષેપ ક્રિયા. 'કેવલજ્ઞાન હવે પામશું, પામશું, પામશું, પામશું રે કે.' ઐસા એક પદ બનાયા. હૃદય બહુત આનન્દમેં છે.' આસો મહીનેમેં ઉનકો સમ્યગ્દર્શન હુઆ છે. ચાહે યહ પત્રસે હો યા બાદમેં કુછ દિનકે (બાદ) હો. મૂલપદકા સ્મરણ હોનેમેં સોભાગભાઈ નિમિત્ત પડે હૈં ઇસલિયે લિખતે હૈં કિ આપકી હમારે પર કૃપા રહે. જૈસી કૃપા હુઈ વૈસી કૃપા રહે. માને આપકા નિમિત્ત હમકો બના રહે, હમ તો આપકી ચરણરજ હૈં. તો જિસકે નિમિત્તસે કૃપાલુદેવ જૈસે આત્માકો ભી નિમિત્ત-નૈમિત્તિક સંબંધસે લાભ હુઆ હો, વહ નિમિત્ત ભી કિતના પાત્ર હોગા ? વહ નિમિત્તમેં ભી કિતની યોગ્યતા હોગી ? યહ વિચાર કરને લાયક બાત છે.

પ્રશ્ન :- કૃપાલુદેવને સમ્યગ્દર્શન કઈ તારીખે થયું ? સમાધાન :- મળતું નથી કંઈ. Exact કંઈ મળતું નથી પણ વાતો તો ઘણી, જુદી જુદી રીતે અનેક વાતો બહાર આવી છે. મહિમા વધારવા માટે પણ કોઈ ને કોઈ વાત આવતી રહે. Authentic કોઈ વાત નથી હોતી.

મુમુક્ષુ :- કૃપાલુદેવને ખ્યાલમાં હતું કે સોભાગભાઈ ને એ બેય સાથે હતા.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- એમનો તો જાતિસ્મરણ હતું એટલે હોઈ શકે છે પણ આમ પત્રમાં ક્યાંય સીધો ઉલ્લેખ નથી. એમના પોતાના હસ્તાક્ષરમાં નથી મળતું.

મુમુક્ષુ :- ૧૫૨વા પત્ર સોભાગભાઈકો લિખા છે. મતલબ સોભાગભાઈ ઐર ઇનકા પરિચય કા પ્રારંભિક દૌર છે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હાં, પહલા પત્ર ૧૩૧ છે. યહ ૧૫૨ છે, સબસે પહલા પત્ર ૧૩૧ છે. પ્રથમ ભાદવામેં પ્રથમ પરિચય હુઆ છે ઐર યહાંસે દોનોંકે બીચમેં હમેશા સત્સંગમેં રહનેકે લિયે ભાવ વ્યક્ત ક્રિયે હૈં ઐર શંકરાચાર્યકા શ્લોક ભી વહીં ઉદ્ધરણ ક્રિયા છે. ૧૩૨ છે, ૧૩૨ પહલા પત્ર છે. ૧૩૧ નહીં, હિન્દીમેં ૧૩૨ છે. 'ક્ષણમપિ સજ્જનસંગતિરેકા ભવતિ ભવાર્ણવતરણે નૌકા' યહ શંકરાચાર્યકા શ્લોક છે. એક ક્ષણ ભી સજ્જનકી સંગતિ મિલ જાય તો ભવરૂપી સમુદ્ર તરનેકે લિયે વહ નૌકા બનતી છે. એક ક્ષણકા સત્સંગ સંસારકો તાર દેતા છે. વહ શંકરાચાર્યને સત્સંગકી મહિમા કી છે. ઉનલોગોંમેં ભી સત્સંગકી બહુત મહિમા છે.

અર્થ ક્રિયા છે. 'સત્યુરુષકા ક્ષણભરકા ભી સમાગમ સંસારરૂપી સમુદ્ર તરનેકે લિયે નૌકારૂપ હોતા છે. વહ વાક્ય મહાત્મા શંકરાચાર્યજીકા છે; ઐર યહ યથાર્થ હી લગતા છે.' ઉસમેં કોઈ અયથાર્થતા નહીં છે. ક્યોંકિ યહ બાત તીર્થકરકી ધ્વનિમેં આવી છે, બાદમેં શંકરાચાર્યને લિયા. અન્યમત પૈદા હુઆ ન ? તો ઉનલોગોંને કોઈ ન કોઈ બાત તો તીર્થકરકી ઉઠાવી છે, ફિર વિકૃતિમેં Adulteration ક્રિયા વહ અલગ બાત છે. જો મૂલ બાત છે વહ તો તીર્થકરકી છે. ઇસલિયે જ્ઞાનીકી નજર વહાં પહુંચતી છે કિ યહ તો મૂલ બાત છે, તીર્થકરકી છે. 'ચાર વેદ પુરાણ આદિ શાસ્ત્ર સૌ મિથ્યાત્વના, પણ જ્ઞાનીને તે જ્ઞાન ભાસ્યા...' ઉસમેંસે ઉસને તીર્થકરકી વાણી પકડી, 'એ જ ઠેકાણે ઠરો.' ઉસ મૂલ બાતકો પકડકરકે સ્થિર હો જાઓ. 'જિનવર કહે છે જ્ઞાન તેને સર્વ ભવ્યો સાંભળો.' જ્ઞાની અજ્ઞાનીકા શાસ્ત્ર પઢે ઉસમેં મૂલ બાત તીર્થકરકી છે વહ અલગ નિકાલ દે ઐર દૂસરી બાતકો ભી વે અલગ નિકાલ સકતે હૈં. યહ બાત તીર્થકરકી નહીં છે (યા) યહ બાત તીર્થકરકી છે.

‘આપને મેરે સમાગમસે હુઆ આનન્દ ઔર વિયોગસે હુઆ અનાનન્દ...’ આનન્દકા વિપરીત. ‘સમાગમસે હુઆ આનન્દ...’ એક દૃઢ મિલે તો વિયોગસે અનાનન્દ હો ગયા. પ્રેમ તો વહાંસે શુરૂ હો ગયા થા કિ વિયોગ બરદાસ્ત કર સકતે નહીં થે. ‘વિયોગસે હુઆ અનાન્દ પ્રદર્શિત કિયા હૈ, વૈસા હી આપકે સમાગમકે લિયે મુઝે ભી હુઆ હૈ.’ ઔર પ્રેમ કભી એક તરફા હોતા નહીં હૈ. One way traffic નહીં હૈ વહ અરસપરસ હોતા હૈ. તો જૈસા આપકો હુઆ વૈસા મુઝે ભી હુઆ હૈ. આપકે વિયોગસે મુઝે ભી અનાનન્દ હુઆ હૈ.

‘અન્તઃકરણમં નિરંતર ઐસા હી આયા કરતા હૈ કિ પરમાર્થરૂપ હોના, ઔર અનેકકો પરમાર્થ સિદ્ધ કરનેમં સહાયક હોના યહી કર્તવ્ય હૈ, તથાપિ કુછ વૈસા યોગ અભી વિયોગમં હૈ. ભવિષ્યજ્ઞાનકી જિસમં આવશ્યકતા હૈ, ઉસ બાતપર અભી ધ્યાન નહીં રહા.’ વહ ભવિષ્યજ્ઞાનવાલી બાતપર હમ ઉપયોગ દેતે નહીં હૈં. બસ ! ઉતના પોસ્ટકાર્ડ જિતના સંક્ષેપ પત્ર હૈ. પ્રથમ ભાદોં વદી ૧૩, પહેલા ભાદરવા વદમાં પરિચયમાં આવ્યા છે. પછી બીજો ભાદરવો અને આસો સુદ ૧૧નો પહેલો પત્ર છે. દોઢેક મહિનામાં સમ્યગ્દર્શન થયું હોય એવું લાગે છે. સોભાગભાઈકે સમાગમકે બાદ કરીબ ડેઢ-દો માસમં સમ્યગ્દર્શન હો ગયા હૈ. ઇસલિયે ઉનકા ઉપકાર અનેક જગહ ગાયા હૈ. ઉતના હી નહીં, હમ આપકો ઇસકા બદલા કેસે દે ? કિ ઇસી ભવમં આપકો જ્ઞાનપ્રાપ્તિ કરાયેંગે. વહ Promise દિયા હૈ ઔર કરાયા ભી હૈ.

(યહાં કહતે હૈં), ‘અર્થાત્ વહ વૃત્તિ કહતી હૈ કિ હમં આદિપુરુષકી પ્રાપ્તિ હુઈ હૈ...’ સત્પુરુષકી વૃત્તિ ક્યા કહતી હૈ ? કિ, હમકો સ્વરૂપકા અનુભવ હુઆ હૈ, પરમબ્રહ્મકા અનુભવ હુઆ હૈ. ‘ઔર યહ એક હી પ્રાપ્ત કરને યોગ્ય હૈ, અન્ય કુછ ભી પ્રાપ્ત કરને યોગ્ય નહીં હૈ, ઇસલિયે આપ પ્રાપ્ત કીજિયે.’ મુમુક્ષુકો કહતે હૈં કિ આપ ભી પ્રાપ્ત કરે.

‘ઉલ્લાસમં વારંવાર કહતી હૈ કિ આપ ઉસ પુરાણપુરુષકો પ્રાપ્ત કરે, ઔર યદિ ઉસ પ્રાપ્તિકો અચલ પ્રેમસે ચાહેંગે તો હમ વહ આદિપુરુષ આપકો દે દેંગી.’ ઔર યહાં બજાર મતલબ ક્યા હૈ ? મુમુક્ષુવૃન્દ. મુમુક્ષુવૃન્દમં

સત્પુરુષકી વૃત્તિ ઐસા બોલતી હૈ કિ હમકો તો પરમબ્રહ્મકી પ્રાપ્તિ હો ગઈ. ‘ઔર યદિ ઉસ પ્રાપ્તિકો અચલ પ્રેમસે ચાહેંગે તો...’ કેસે પ્રેમસે ? જો પ્રેમ કભી ભી કિસી પ્રકારકી કઠિનાઈ આનેસે, પ્રતિકૂલતા આનેસે વિચલીત હોતા નહીં ઉસકો અચલીત પ્રેમ કહતે હૈં. પ્રતિકૂલતાસે વહ વિચલીત હોનેવાલા નહીં હૈ. ‘અચલ પ્રેમસે ચાહેંગે તો હમ વહ આદિપુરુષ આપકો દે દેંગી.’ આપકા અચલ પ્રેમ દેખકર આપકો ભી અનુભવ કરા દેંગે. તો જ્ઞાનીપુરુષ મુમુક્ષુકો ઐસા કહતે હૈં કિ, આપકો અપને ગુણનિધાનકી અચલ પ્રેમસે પ્રાપ્તિ કરની હૈ ? હમ તુમકો કરા દેંગે, જાઓ !

મુમુક્ષુ :- કરા દેંગે નહીં, દે દેંગે.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- દે દેંગે. હમ તુમકો આદિપુરુષ (દે દેંગે). હમારે દહીકી મટકીમં માધવ હૈ, તુમકો દે દેંગે. બેચનેમં - બીકનેમં તો પૈસા લેકર દહી બેચા જાતા હૈ, યે તો મુમુક્ષુસે કુછ લિયે બિના ભગવાનકો દે દેતે હૈં, લો ઉઠાઓ !

‘હમ ઇસે મટકીમં રખકર બેચને નિકલી હૈં, ઔર ગ્રાહક દેખકર દે દેતી હૈં...’ ગ્રાહક ચાહિયે, સચ્ચા ગ્રાહક ચાહિયે. ઇસલિયે કોઈ ગ્રાહક બને, પુકાર ઇસલિયે કરતે હૈં કિ, કોઈ ગ્રાહક બને. ‘ગ્રાહક બનો, અચલ પ્રેમસે કોઈ ગ્રાહક બનો, તો વાસુદેવકી પ્રાપ્તિ કરા દેંગી.’ દેખો !

મુમુક્ષુ :- આત્માના ગ્રાહક ત્વરાથી થાઓ.

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- સ્વદ્રવ્યકે ગ્રાહક ત્વરાસે હો ઔર પરદ્રવ્યકી ગ્રાહકતા ત્વરાસે તજો. યહ ‘ત્વરા’ શબ્દ આતા હૈ પૂર્ણતાકે લક્ષસે. બહુત Force આતા હૈ ન ! અભી-અભી પૂર્ણ હોના હૈ, અભી-અભી પૂર્ણ હોના હૈ, ઇતના Force આતા હૈ. વહ ‘ત્વરા’ શબ્દ યહાંસે નિકલા હૈ.

ગુરુદેવકો યહ બહુત જચ ગયા. તો ગુરુદેવને અપની ભાવનાકી જો ગાથાએ થી ઉસ પર જો પ્રવચન કિયે ઉસમં ઉસ દસ વચનપર ભી પ્રવચન કિયે ઔર બોલે કિ બારહ અંગકા સાર હૈ. ક્યોંકિ પૂર્ણતાકા લક્ષ વહાંસે શુરૂ હુઆ ન ! વહાંસે શુરૂઆત હોતી હૈ, બરાબર, યથાર્થ શુરૂઆત હોતી હૈ, કેસી ? પૂર્ણતાકે લક્ષસે જો આગે બઢા, વહ ગિરેગા નહીં. વહ પૂર્ણતા લેકર રહેગા. પૂર્ણ હોકર રહેગા, ઐસી બાત હૈ, ઐસા Force આતા હૈ.

‘મટકીમં રખકર બેચને નિકલનેકા અર્થ યહ હૈ કિ

સહસ્ત્રદલ કમલમેં હમેં વાસુદેવ ભગવાન મિલે હેં, મકખનકા તો નામ માત્ર હે;...’ હમકો તો વાસુદેવ ભગવાન મિલે હેં. ‘યદિ સારી સૃષ્ટિકો મથ કર મકખન નિકાલેં તો માત્ર એક અમૃતરૂપ વાસુદેવ ભગવાન હી મકખન નિકલતા હે.’ પૂરી સૃષ્ટિમેંસે કોઈ મકખન નિકાલેં તો કયા હે ? જો વાસુદેવ હેં વહી અમૃત હેં, દૂસરા કોઈ અમૃત નહીં હે.

૨૦૬ પત્રમેં આખરી પંક્તિ હે, ‘ભાગવતવાલી બાત આત્મજ્ઞાનસે જાની હુઈ હે.’ ‘મહાત્મા કબીરજીકી દૂસરી પુસ્તકેં મિલ સકેં તો ભેજનેકી કૃપા કીજિયેગા. પારમાર્થિક વિષયમેં અભી મૌન રહનેકા કારણ પરમાત્માકી ઇચ્છા હે. જબ તક અસંગ નહીં હોંગે ઓર ઉસકે બાદ ઉસકી ઇચ્છા નહીં હોગી. તબ તક પ્રગટરૂપસે માર્ગ નહીં કહેંગે, ઓર ઐસા સભી મહાત્માઓંકા રિવાજ હે. હમ તો દીન માત્ર હે. ભાગવતવાલી બાત આત્મજ્ઞાનસે જાની હુઈ હે.’ યહ હમારે આત્મજ્ઞાન – અનુભવકા વિષય હે.

ભાગવતશાસ્ત્ર હે. શ્રીકૃષ્ણ હેં વહ કોઈ અન્યમતિ નહીં હેં. શ્રીકૃષ્ણ જૈન થે, કૌન થે ? ઉનકો સોલહ હજાર એકસો આઠ રાનિયાં થી. તીન ખંડકે વાસુદેવ થે ન ! તો એક રાનીકા એક સોનેકા મહલ, સોનેકી દ્વારિકા થી ન ! એક રાનીકા એક સોનેકા મહલ ઓર એક રાનીકો એક સોનેકા જિનમંદિર. તો સોલહ હજાર એકસો આઠ રાનિયાં થી ઓર સોલહ હજાર એકસો આઠ મહલ થે ઓર સોલહ હજાર એકસો આઠ જિનમંદિર થે. અપને Complexમેં ! વહ ઐસા Complex બના હુઆ થા. આજકલ Complex બનાતે હેં ન ! નહાનેકા – સ્નાન કરનેકા હોજ બનાતે હેં ઓર ખેલને કે લિયે કોઈ બનાતે હેં, તો ધર્માત્મા હેં વે જિનમંદિર બનાતે હેં. જિસકો જૈસા રાગ ! ધર્માત્મા હોતે હેં વે જિનમંદિર બનાયેંગે. વે જૈન થે. વહ અપને યહાં હરિવંશપુરાણ હે, હરિવંશપુરાણ હે. લેકિન ઉનલોગોંને કોઈ વિશેષરૂપસે યહ બાત લિખી હે, તો વહ મૂલ બાતકી ઉપમા હે. વહ ભી અધ્યાત્મ ભાગવતમેં ઐસા હી ઉતારતે હેં, અપને આત્માપર, પરબ્રહ્મ પર હી ઉતારતે હેં.

અત્યારે જે ભાગવત છે એ અન્યમતનું શાસ્ત્ર છે પણ એની અંદર અમુક મૂળ વાતો રહી ગઈ છે. મૂલ બાત જો રહ ગઈ હે, અપનેકો તો ઉસસે મતલબ હે.

જૈસે અભી જો શ્વેતાંબરકે શાસ્ત્ર હેં, ઉસમેં ભી યહ

ગડબડ હો ગઈ, લેકિન ઉસમેં ‘આચારંગ’કા પહલા સૂત્ર કયા હે ? ‘જો એગં જાણઈ, સો સવ્વં જાણઈ’ વહ નિર્ગ્રંથ પ્રવચન હે, વહ મૂલ બાત હે. તો મૂલ બાત તો હરજગહ કહીં ન કહીં રહ ગઈ હે. અપને તો મૂલ બાતસે સંબંધ હે, દૂસરી બાતસે સંબંધ નહીં હે. મૂલ બાતકો જાને ઓર વહાં સ્થિર હોવે – ઉસકો પકડે.

‘ઐસે સૂક્ષ્મ સ્વરૂપકો સ્થૂલ બનાકર વ્યાસજીને અદ્ભુત ભક્તિકા ગાન કિયા હે. યહ કથા ઓર સમસ્ત ભાગવત ઇસ એકકો હી પ્રાપ્ત કરાનેકે લિયે અક્ષરશઃ ભરપૂર હે.’ આત્માકો પ્રાપ્ત કરાનેકી વહ બાત હે. ‘ઓર વહ મુઝે (હમેં) બહુત સમય પહલે સમઝમેં આ ગયા હે;...’ ઉનલોગોંકો સમઝમેં આયે કિ નહીં આયે ! વહ તો કૃષ્ણકો ભગવાન માનકરકે સમઝતે હેં, હમકો હમારે જ્ઞાનમેં તો દૂસરી રીતસે સબ સમઝમેં આયા હે.

‘આજ અતિ અતિ સ્મરણમેં હે; ક્યોંકિ સાક્ષાત્ અનુભવપ્રાપ્તિ હે;...’ ઇસલિયે વહ બાત જ્યાદા સ્મરણમેં આપી. ‘ઓર ઇસી કારણ આજકી પરમ અદ્ભુત દશા હે.’ અપની દશાકી ખુલ્લી ચર્ચા કી હે. ‘ઐસી દશાસે જીવ ઉન્મત્ત ભી હુએ બિના નહીં રહેગા;...’ ઐસી દશા આયગી તો દૂસરોંકો પાગલ દિખેગા કિ યહ કયા પાગલ હો ગયા હે ? માન લો ન પાગલ હો ગયા હે તો હો ગયા હે ! અબ જ્ઞાનીકો જગતકે Certificateકી જરૂરત નહીં હે.

‘ઓર વાસુદેવ હરિ જાન-બૂઝકર કુછ સમયકે લિયે અદૃશ્ય ભી હો જાયે, ઐસે લક્ષણકે ધારક હેં.’ કેસી બાત લિખી હે ! કોઈ ચ્યુત હો જાય તો અનુભવદશા છૂટ જાયે. યે વાસુદેવ હરિ હેં (વે) થોડા અપલક્ષણવાલે હેં, કભી-કભી અંતર્ધાન હો જાતે હેં ‘ઇસલિયે હમ અસંગતા ચાહતે હેં;...’ કિ (ઉનહેં) અંતર્ધાન હોને દેંગે નહીં. ‘ઓર આપકા સહવાસ ભી અસંગતા હી હે, ઇસલિયે ભી વહ હમેં વિશેષ પ્રિય હે.’ અસંગતાસે ભી આપકા સમાગમ હમકો જ્યાદા પ્રિય હે.

ઇસ તરહસે સત્સંગકા ભી માહાત્મ્ય બતાયા ઓર પરાભક્તિ કયા ચીજ હોતી હે ? ઓર ઉસસે કિતને લાભકી પ્રાપ્તિ હોતી હે ? વહ સબ બાત લી. યહાં તક રખતે હેં. વિશેષ કહેંગે...

દ્રવ્યદષ્ટિ પ્રકાશ પત્રાંક-૧૭ ઉપર પૂજ્ય ભાઈશ્રી શશીભાઈનું પ્રવચન તા. ૨૫-૦૭-૧૯૮૧

‘મોક્ષમાર્ગીકો કુટુંબીજનોં મધ્યે સુખ મિલતા હોવે, યહ કલ્પના હી ગલત હૈ.’ મોક્ષમાર્ગી ને કુટુંબીઓ વચ્ચે સુખ મળે, મળતું હોય એ કલ્પના છે. પોતાની યોગ્યતા અનુસાર જીવ કલ્પના કરે છે. પોતાની પણ એવી યોગ્યતા છે ને ! કે એને કુટુંબ વચ્ચે સારું લાગે છે. પોતાના સગા હોય, પોતાના સ્વજનો હોય, પ્રિયજનો હોય (એમાં) સારું લાગે છે. એવી એક જ્ઞાની માટે કલ્પના થઈ જાય છે, પણ જે બનારસીદાસજી એ કહ્યું છે એવી (જ્ઞાનીપુરુષની અંતરંગ) સ્થિતિ હોય છે. ‘કાલ સો કુટુંબ કાજ, લોક-લાજ લાર સી.’ કુટુંબના કાર્યો કાળ જેવાં લાગે. આ તો આત્માર્થીની ભૂમિકામાં આ દશા થઈ જાય છે.

જ્યારે કોઈ જીવ પોતાના આત્માના (હિતના) સાધન માટે બધી જગ્યાએથી ઉદાસીન થઈને, ઉપેક્ષિત થઈને એક નિજ કાર્યમાં સાવધાન થઈને સંલગ્ન થાય છે ત્યારે એને બીજા-બીજા ઉદયના કુટુંબ માટે કરવાં પડતાં કાર્યો બોજારૂપ લાગવા માંડે (છે). આ એક આત્માર્થીની ભૂમિકાનું પણ એક લક્ષણ છે. આત્માર્થીનું સ્વરૂપ છે કે એને કુટુંબના કાર્યો કરવા પડે છે. કરવાની હોંશ તો નથી જ પણ કરવા પડે એ પણ એને બોજો લાગે. તો જ્ઞાની માટે કલ્પના કરવી કે એને કુટુંબીજનો મધ્યે બહુ મજા આવતી હશે ! (એ કલ્પના છે). એના માટે બનારસીદાસજીએ ચોખ્ખું કહ્યું કે ‘કાળ સો કુટુંબ કાજ...’ (કુટુંબના કાર્યો) કાળ દેખાય છે. ક્યાં આ આવી પડ્યું ? કુટુંબનું કામ ક્યાં આવી પડ્યું ? એમ (લાગે છે).

એટલા માટે એવા જીવોના કુટુંબીક કાર્યોનો બોજો બીજા ઉપાડવાનો પ્રયત્ન કરે. જેમકે કોઈ આત્માર્થી હોય તો એને એમ કહે કે ‘ભાઈ ! તમારે આત્મકાર્ય માટે નિવૃત્તિ જોઈતી હોય, તો એ નિવૃત્તિ માટે મદદ કરવા તૈયાર છીએ. અને જે પ્રકારે એમાં મદદ કરતાં અમારે બોજો ઉપાડવો પડે એ તમારા કામનો બોજો અમે ઉપાડી લેશું. તમે જો આત્માનું કરતાં હો તો, તમે તમારા આત્માનું સારી રીતે

(હિત) કરો એવી અમારી અનુમોદના છે.’ - એનું નામ વાત્સલ્ય કહેવામાં આવે છે. એનું નામ વાત્સલ્ય છે.

‘ઉસે તો નિરંતર આત્મરમણતા ચાહિયે.’ મોક્ષમાર્ગીને તો આત્માની



રમણતા જોઈએ છે. બીજું કાંઈ જોઈતું નથી. ‘અરે ! જિસે ધાર્મિક જનોંકે સંગ ભી નહીં રુચતે, ઉસે કુટુંબ-સંગ તો રુચ હી કેસે સકતા હૈ !’ આ અવતરણ ચિહ્ન એમણે એટલા માટે મૂક્યું છે કે કલકત્તાના મંડળથી પછી એ જરા જુદાં પડી ગયા હતાં. જ્યારે એમણે વાંચન છોડી દીધું પછી એમને મુમુક્ષુમંડળમાં રહેલા સામાન્ય મુમુક્ષુઓની યોગ્યતાનો ખ્યાલ આવી ગયો. એમણે જોયું કે આ સંગ કરવા યોગ્ય જીવો નથી. ભલે ધાર્મિક જન છે તોપણ, ધાર્મિક દષ્ટિ એ સંગ કરવા યોગ્ય જીવો નથી.

મુમુક્ષુ :- અહીં ‘લોક-લાજ લાર સી’ કહ્યું એટલે શું ?

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- ‘લોક-લાજ લારસી’ માં શું છે ? કે જગતમાં લોકલાજની કિંમત બહુ છે. ‘લોકલાજ લારસી’ કહેવામાં બનારસીદાસજીનો અભિપ્રાય છે કે જગતમાં લોક લોજે માણસ દબાયને પણ (કામ) કરે. ન કરવું હોય તે દબાયને પણ કરે. દા.ત. કોઈ અનુચિત કાર્ય જીવ ન કરે. એને કરવાની ઇચ્છા હોય તોપણ ન કરે. કેમ ન કરે ? કે લોકોની લાજ આડી આવે.

મુમુક્ષુ :- લોકસંજ્ઞા ગણવી ?

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- હા, લોકસંજ્ઞા કહો - લોકલાજ કહો (બન્ને એક જ છે). લોકસંજ્ઞા થોડાં વિશાળ પાયા ઉપર જાય છે. આમ તો શું છે કે પોતાની લોકલાજે જે કરવું પડે તે કરે, અભિપ્રાયથી ન કરે. કરવાના અભિપ્રાયથી ન કરે એટલી બધી લોકોને કિંમત આપે છે. એના સ્થાન ઉપર લોકલાજની કિંમતનું વજન પડે છે કે ઇચ્છા વિરુદ્ધ પણ

એ લોકલાજ ખાતર કરે એની કિંમત જગતમાં એટલી બધી છે. (અને) જ્ઞાનીઓને એની કિંમત મોઢાની લાળ જેટલી છે ! મોઢામાંથી લાળ પડતી હોય તો ભલે પડી જાય. એને કાંઈ પાછી લેવાની જરૂર નથી. એમ લોકલાજની કાંઈ કિંમત નથી. મોઢાની લાળ જેટલી એની કિંમત છે. એમ કહે છે. એમ કરીને એની કિંમત ઘટાડી છે. એની કિંમત કાંઈ નથી. લૌકિક આબરૂની કાંઈ કિંમત નથી. અથવા જ્ઞાની માટે કોઈ લોકો અભિપ્રાય બાંધે કે આ તો અતડાં છે, કોઈની સાથે ભળતાં નથી, ઠીક ! ભલેને અતડાં કહે ! એથી પણ ખરાબ કહેવું હોય તો કહે ને ! આપણે તો અંદરમાં આપણું કામ કરવું છે ને ! જેને ઠીક પડે તેમ ચીતરે એની યોગ્યતા પ્રમાણે. એના ખાતર એ પોતાની આરાધનાને લોકલાજમાં ગૌણ કરી નાખે અને બીજાના અભિપ્રાયને અનુકૂળ ચાલવાનો પ્રયત્ન કરે, એવું ન બને.

આ બાબતમાં તો મારે થોડી અંગત ચર્ચા થઈ છે કે જ્યારે એમણે (સોગાનીજીએ) એ વાત કરી કે મારા વિષે તમે કોઈને કાંઈ કહેતા નહીં. એમના હિંદીમાં શબ્દો એ પ્રમાણે હતાં કે 'મैं आशा करता हूँ कि आप मेरे विषयमें किसीसे कुछ नहीं कहेंगे.' એમણે જોયું કે મારે તો અહીં બહુ સંપર્ક નથી પણ આમને તો અહીં ઓછા-વત્તા પ્રમાણમાં સંપર્ક હોય, બીજાને વાત કરશે તો પ્રસિદ્ધિનું કારણ થશે. એટલે એમણે શરૂઆતમાં એ વાત આ શબ્દોમાં કહી હતી કે 'मैं आपसे आशा करता हूँ कि आप मेरे विषयमें किसीसे कुछ नहीं कहेंगे.' હવે, એ જ્ઞાની હતાં અને લોકો એમને અજ્ઞાની તરીકે જાણતાં હતાં કે એમની સાથે એક મુમુક્ષુ જાણીને અજ્ઞાની તરીકેનો વ્યવહાર પણ કરતાં હતાં. તો જ્ઞાનીને એ પસંદ છે, એમાં એમને કાંઈ વાંધો નથી. ભલે અજ્ઞાની જાણીને વર્તે પણ જ્ઞાની તરીકે પ્રસિદ્ધિ થયાં પછી અનેક પ્રકારના જે ઉપદ્રવ શરૂ થાય તે ઉપદ્રવની ઉપાધિ તેમને જોઈતી નથી. અને એમ હોવામાં પણ એમની વિચક્ષણતા છે અથવા જ્ઞાનીનું જ્ઞાનીપણું છે. અજ્ઞાનીપણે રહેવામાં પણ જ્ઞાનીનું જ્ઞાનીપણું છે. અત્યારે તો કાળ ઘણો ખરાબ છે (પણ) શ્રીમદ્જીએ ૧૦૦ વર્ષ પહેલાં લખ્યું છે કે, અજ્ઞાની થઈને રહેવું છે. લોકોની વચ્ચે જ્ઞાની થઈને નથી રહેવું પણ અજ્ઞાની થઈને રહેવું છે. એટલે ઉપદ્રવનો

કોઈ પ્રસંગ ઊભો ન થાય.

મુમુક્ષુ :- બીજા અજાણ માણસોને તો નુકસાન થઈ જાય ને !

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- એવું છે કે પાત્રતાવાળા ઠેકાણે પડી જાય છે. પાત્રતાવાળા ઠેકાણે પડી જાય છે. અને પ્રસિદ્ધ થયાં તો પણ કાંઈ બધાને એક સરખો અભિપ્રાય છે એવું તો અત્યારે પણ જોવામાં આવતું નથી અને એ પોતે બીજાની ક્યાં ચિંતા કરે ? એ પોતે પોતાની ચિંતા કરે કે બીજાની કરે ? મને શું નુકસાન થશે એ વિચાર પહેલા કરે છે. એમનો એવો અભિપ્રાય નથી કે હું બીજાનું ભલું કરું અને હું બીજાનું ભલું કરવામાં નિમિત્ત પડું - એવો અભિપ્રાય નથી. (અભિપ્રાય તો એવો હોય કે) હું તો મારું કરવા નીકળ્યો છું, મારું હિત કરવાની મને એક ભૂમિકાએ બહુ તીવ્ર ભાવના થઈ હતી, ઘણી તીવ્ર ભાવના થતાં મારું હિત થવાનો પ્રસંગ પણ બન્યો, અને મારું હિત થયું પણ ખરું, પણ હજુ મારું હિત પૂરેપૂરું નથી થયું અને પૂરું હિત કરવાની મારી શીઘ્ર ઇચ્છા છે તો હું મારા કામે લાગી જાઉં અને એવું મારું કામ પૂરું કરવા જતાં વચ્ચે કાંઈ વિક્ષેપ પડવાનો પ્રકાર ઉપજતો હોય તો તેનાથી મારે ખસીને ચાલવું જોઈએ, એનાથી દૂર તરીને ચાલવું જોઈએ. જો એનાથી હું તરીને ન ચાલું તો એમાં ફસાવાનો વારો આવે. એટલે વિવેક કરે છે. પોતાના હિત સંબંધીનો એ વિવેક કરે છે.

એટલે છેલ્લે પણ જ્યારે થોડાં માણસોનો પરિચય વધી ગયો ત્યારે પણ એમણે એ વાત ફરીને કરી છે કે, ૧૨-૧૪ આના નિવૃત્ત થઈ ગયો છું, ઘંધો છોકરાઓએ સંભાળ્યો છે. એમ કહ્યું કે, 'છોટી-મોટી બાતમેં વે લોગ પૂછ લેતે હૈં. બાકી તો ૧૨-૧૪ આની નિવૃત્ત હૂં. અભી પૂર્ણ નિવૃત્તિ લેકર બૈઠ જાના હૈં.' એટલે મેં કહ્યું કે તો પછી સોનગઢ જ આવશો ને ? તો કહ્યું 'અભી નિર્ણય તો નહીં ક્રિયા હૈ પર સોનગઢ આના હુઆ તો દો દૈ ગુરુદેવકા વ્યાખ્યાન ઔર મૈં ઔર મેરા કમરા, વે ચર્ચા-ફર્ચા નહીં ચલેગી' ઠીક ! સવાર-બપોર-સાંજ ચર્ચા માટે બધાં ભેગા થતાં હતાં એમ નહીં થાય. કહી દીધું કે, આ ચર્ચા-ફર્ચા પછી હું ચલાવીશ નહિ. ત્યાં હું નિવૃત્તિના સ્થળમાં આવીશ

તો હું ને મારો ઓરડો, એક વખત ગુરુદેવનું વ્યાખ્યાન, આ સિવાય હું કંઈ પ્રવૃત્તિ નહીં કરું. પછી એક વાત કરી કે 'ભૂતકાલમેં ભી મુજે સાધર્મિઓંકા સંગ છોડનેમેં દિક્કત હુઈ થી. અભી મુજે કોઈ પરિચય બઢાના નહીં હૈ.' એટલે આ ટાઈમે તો આવતાં હતાં પણ એમને અંદરમાં અભિપ્રાય શું હતો. ૧૯૫૪ની સાલમાં હજી વાંચન છે તોપણ પત્રની અંદર એમનો અભિપ્રાય શું નીકળ્યો છે કે, 'જિસે ધાર્મિક જનોંકે સંગ ભી નહીં રુચતે,...' કેમકે જે આવતાં હતાં એની યોગ્યતાનો તો ખ્યાલ આવી ગયો હતો. એટલે જોયું કે કેટલાંક તો વિરોધ કરે છે એ ખબર હોય એમને, ખ્યાલ તો આવી જ જાય કે, આને મેળ પડતો નથી. એટલે ભલે એ ધાર્મિક જન કહેવાય પણ એનો સંગ એને રુચતો નથી. 'ઉસે કુટુંબ-સંગ તો રુચ હી કેસે સકતા હૈ !' એમાં વળી કુટુંબીઓ તો એટલું પણ નથી સમજતાં. આ તો હજી કાંઈક ચર્ચા કરવા પણ ભેગા થાય છે. કુટુંબીઓ ઘરે બૈરા-છોકરાઓ તો હજી A,B,C,D પણ સમજતાં નથી તો એને કેવી રીતે એ રુચે ?

મુમુક્ષુ :- જેમ કૃપાળુદેવને લોકો જ્ઞાની તરીકે અનુસરતાં હતાં એવી રીતે સોનગઢના ચર્ચામાં આવનારા વ્યક્તિઓ જે સોગાનીજીની ચર્ચામાં આવતાં હતાં એ જ્ઞાની તરીકે આવતાં હતાં કે બીજા વિદ્વાનોની પ્રવૃત્તિ ચાલતી હતી એવી રીતે સમ્મિલિત થતાં હતાં ?

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- ના, એવી જ રીતે, લગભગ એવી રીતે. પછી અંદરનું - મનનું પરિણામ તો ખ્યાલ ન આવે. પણ એવો તો કોઈક જ નીકળે કે જેને ઓળખાણ થાય. બાકી તો સામાન્ય રીતે ત્યાં તત્ત્વજ્ઞાન વિષયક પ્રવૃત્તિમાં જે સાંભળાવનાર હોય એને સાંભળનારા મળી જાય. એવી એક રૂઢિ છે એટલે એ રૂઢિ અનુસાર જ લગભગ પરિસ્થિતિ થતી હતી. ચાલો ! અહીંયા ચર્ચા થાય છે, ચાલો સાંભળીએ. પછી આમની થોડી પદ્ધતિ વિશિષ્ટ પ્રકારની હતી એટલે લોકોને કુતૂહલ પણ વધે. (પરંતુ) ઓળખાણ થવી તો સાવ બીજી જ વાત છે. જ્ઞાની તરીકે માને અને ઓઘસંજ્ઞાએ માને એ બીજી વાત છે, ન માને એ બીજી વાત છે અને એ માને તો ઓઘસંજ્ઞાએ બીજી વાત છે અને માને તો ઓળખીને માને એ ત્રીજી વાત છે.

'અરે ! વિકલ્પાશ્રિત પદાર્થસે ભી લાભ નહીં, સાથ હી વિકલ્પસે ભી લાભ નહીં.' વિકલ્પના વિષયભૂત કોઈ પદાર્થથી આત્માને લાભ નથી અને એવા વિકલ્પોથી પણ આ આત્માને કાંઈ લાભ નથી. આ અભિપ્રાયમાં એ ઊભા છે.

'આપને લિખા કિ નિમિત્ત-નૈમિત્તિક સંબંધ એવો છે કે તીવ્ર ભાવના હોય તો પાપનો ઉદય પલટીને પુણ્યનો ઉદય થઈ જાય.' (એટલેકે) તમારો પાપનો ઉદય છે અને તમે સોનગઢ ગુરુ-સંગમાં આવી શક્તા નથી પણ જો તમારી ખરેખરી તીવ્ર ભાવના હોયને, તો તમારો પાપનો ઉદય પલટીને પુણ્યનો ઉદય થઈ જાય, ને તો તમને ગુરુદેવનો સંગ મળે, પણ તમારી ભાવનાની ખામી છે.' ઠીક ! જરા ઓળંભો લખતાં હતાં ઓળંભો બહુ આપતાં હતાં. એ વાતનો ઉત્તર આપ્યો છે કે, 'વિકલ્પાનુસાર પદાર્થકી પ્રાપ્તિ હોના પુણ્ય નહીં હૈ,...' શું (કહ્યું) ? પુણ્ય કોને કહેવું ? કે વિકલ્પ પ્રમાણે બહારમાં પદાર્થની પ્રાપ્તિ થઈ જાય માટે પુણ્ય છે, એમ નથી. 'વરન્ તીવ્રતા પલટકર મંદતા હોના પુણ્ય હૈ.' (આ વાક્યમાં) કષાય શબ્દ અધ્યાહાર છે. કષાયની તીવ્રતા મટીને મંદતા થાય તે પુણ્યભાવ છે અને કષાયની તીવ્રતા થાય તે પાપભાવ છે. 'અતઃ રાગ છૂટને અથવા કમ હોનેમેં સુખ હૈ,...' તે દષ્ટિએ જોઈએ તો રાગનો રસ ઓછો થાય કે રાગનો રસ મટે એમાં આત્માને સુખ છે. 'પદાર્થકે મિલનેમેં નહીં.'

મુમુક્ષુ :- પુણ્યની કેવી વ્યાખ્યા કરી છે !

પૂજ્ય ભાઈશ્રી :- કેવી તાત્ત્વિક વ્યાખ્યા કરી છે !! આ પણ વિશિષ્ટતા છે. જ્ઞાનીઓના જ્ઞાનની આ વિશિષ્ટતા છે કે જેને તત્ત્વદષ્ટિ થાય તેની વાત પણ બીજી રીતે આવે અને એમાં તત્ત્વ ભર્યું હોય છે.

'અતઃ આત્માશ્રિત રાગની મંદતા હોવે, યહ હી ભાવના હૈ.' માટે આત્માનો આશ્રય કરતાં-કરતાં રાગનો રસ ઘટી જાય. એ ભાવના છે. બીજી ભાવના નથી.

કે શ્વોસોચ્છવાસ રોકો, મનને ખાલી કરો તો તમને આત્મવિચારણા કરવા અંદરથી સ્ફુરણા થશે. તો શું એવું ધ્યાન કાંઈ મદદરૂપ થાય ?

સમાધાન :- તે શુભભાવનારૂપ છે. તેમાં (મનની) એકાગ્રતા થાય, પણ ખરું ધ્યાન તો પોતાને અંદરમાં સાચું જ્ઞાન થાય, -તત્ત્વને મૂળમાંથી-સ્વભાવમાંથી ઓળખે તો થાય. સાચું જ્ઞાન થાય તો સાચું ધ્યાન થાય, માટે તત્ત્વને ગ્રહણ કરવું. પોતે પોતાના જ્ઞાન દ્વારા સૂક્ષ્મ ઉપયોગ કરીને પોતાને ગ્રહણ કરે તો તેમાં સાચી એકાગ્રતા થાય. બાકી શ્વોસોચ્છવાસ તો ઘણીવાર તેણે રોક્યા છે ને તેમાં એકાગ્રતા કરી છે; પણ જ્યાં સુધી આત્માનું અસ્તિત્વ ગ્રહણ નથી થયું ત્યાં સુધી માત્ર મનની એકાગ્રતા થાય છે. મૂળ આત્માનું અસ્તિત્વ ગ્રહણ કર્યા વગર એકલી મનની એકાગ્રતા કાંઈ કામ આવતી નથી.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૧૮૮)

પ્રશ્ન :- સૂક્ષ્મ ઉપયોગની ભૂમિકાએ પહોંચવા માટે શું કરવું ?

સમાધાન :- તત્ત્વના ઊંડા વિચારો કરવા, જ્ઞાયકની લગની લગાવવી, તેનો મહિમા કરવો. બહાર ઉપયોગ જે જાય છે તે બધો સ્થૂલ છે. તેની મહિમા અને એકત્વબુદ્ધિ તોડીને હું ચૈતન્ય છું, હું મહિમાનો ભંડાર છું, બધું મારામાં છે, બહારમાં કાંઈ નથી એમ બધા વિકલ્પોની વચ્ચે હું કોણ છું તેને ઓળખવાનો પ્રયત્ન કરવો. તે માટે પોતે સૂક્ષ્મ ઉપયોગ કરે તો તેને ઓળખી શકે છે. બહાર જતો સ્થૂલ ઉપયોગ હોય તો ઓળખી ન શકે. માટે તત્ત્વના વિચારો કરવા, મહાપુરુષોએ જે માર્ગ બતાવ્યો છે તેના વાંચન-વિચારો કરવા અને પોતે અંતરમાં આત્માને ગ્રહણ કરવાનો પ્રયત્ન કરવો.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૧૮૯)



(શ્રીમદ્ રાજચંદ્ર પત્રાંક)

વન અને ઘર એ બન્ને કોઈ પ્રકારે અમને સમાન છે, તથાપિ વનમાં પૂર્ણ વીતરાગભાવને અર્થે રહેવું વધારે રુચિકર લાગે છે; સુખની ઇચ્છા નથી પણ વીતરાગપણાની ઇચ્છા છે.

જગતના કલ્યાણને અર્થે પુરુષાર્થ કરવા વિષે લખ્યું તો તે પુરુષાર્થ કરવાની ઇચ્છા કોઈ પ્રકારે રહે પણ છે, તથાપિ ઉદયને અનુસરીને ચાલવું એ આત્માની સહજ દશા થઈ છે, અને તેવો ઉદયકાળ હાલ સમીપમાં જણાતો નથી; તો તે ઉદેરી આણવાનું બને એવી દશા અમારી નથી.

‘માગી ખાઈને ગુજરાન ચલાવશું; પણ ખેદ નહીં પામીએ; જ્ઞાનના અનંત આનંદ આગળ તે દુઃખ તૃણ માત્ર છે’ આ ભાવાર્થનું જે વચન લખ્યું છે, તે વચનને અમારો નમસ્કાર હો ! એવું જે વચન તે ખરી જોગ્યતા વિના નીકળવું સંભવિત નથી.

‘જીવ એ પુદ્ગલીપદાર્થ નથી, પુદ્ગલ નથી, તેમ પુદ્ગલનો આધાર નથી, તેના રંગવાળો નથી; પોતાની સ્વરૂપસત્તા સિવાય જે અન્ય તેનો તે સ્વામી નથી, કારણ કે પરની ઐશ્વર્યતા સ્વરૂપને વિષે હોય નહીં. વસ્તુત્વધર્મે જોતાં તે કોઈ કાળે પણ પરસંગી પણ નથી.’ એ પ્રમાણે સામાન્ય અર્થ ‘જીવ નવિ પુગલી’ વગેરે પદોનો છે.

‘દુઃખસુખરૂપ કરમ ફળ જાણો, નિશ્ચય એક આનંદો રે,

ચેતનતા પરિણામ ન ચૂકે, ચેતન કહે જિનચંદો રે.’

(શ્રી વાસુપૂજ્ય-સ્તવન, આનંદઘનજી)

પૂજ્ય બહેનશ્રીની તત્ત્વચર્ચા



પ્રશ્ન :- જુદા પાડવાનો અભ્યાસ કરે તો શું એક ક્ષણ એવી આવે જેથી અભેદમાં પરિણતિ જાય ?

સમાધાન :- હા. જુદા પાડવાનો અભ્યાસ કરે તો ન્યારી પરિણતિ થાય. કેટલાકને મૂંઝવણ થાય એટલે થાકી જાય; પણ પોતે પ્રયત્ન કર્યા કરવો, તેમાં મૂઝાવું કે થાકવું નહિ. પોતે ઉત્સાહથી અને ધીરજથી પ્રયત્ન કરવો. પ્રયત્ન કરે તો પ્રગટ થયા વગર રહેતું જ નથી. જેને પોતાની જિજ્ઞાસા ને પ્રયત્ન પોતા તરફ છે તેને કાળ લાગે, પણ થયા વગર રહેતું નથી. પોતાને લગની-રુચિ છે ને કારણ આપે તો કાર્ય આવ્યા વગર રહેતું નથી. જ્યાં સુધી કાર્ય થાય નહિ ત્યાં સુધી સમજવું કે કારણ ઓછું છે. (સ્વાનુભૂતિદર્શન-૧૮૫)



પ્રશ્ન :- આપને પૂર્વભૂમિકામાં શું વિચારો ચાલતા હતા ?

સમાધાન :- મોક્ષ શું ? એકાંત દુઃખ કયા કારણે ? મોક્ષની આવશ્યકતા કેવી રીતે ? પુણ્ય-પાપ બંને દુઃખનું કારણ કેવી રીતે ?—એમ જાતજાતના વિચારો કરી નક્કી કર્યું હતું. સાકર અને કાળીજીરી એ દષ્ટાંતના વિચાર આવતા અને તે આપણી બુદ્ધિથી કઈ રીતે બેસે એવા બધા પ્રકારના વિચારો ચાલતા. તે વખતે જે જે વિચારો આવે તે બધા લખવાની ટેવ હતી એટલે પોતાને માટે લખી લેતી. જેથી પોતાને પાછું વિચારવામાં કામ આવે. ધૂન એવી લાગી રહેતી કે દરેક કાર્યમાં આત્મા જુદો છે, આત્મા જુદો છે, એવી જાતનું રહેતું. પછી એમ થાય કે આત્મા જુદો છે એવું નક્કી તો કર્યું પણ જુદો રહેતો તો નથી—એમ કરી કરીને એવા બધા વિચારો કરતી. કામકાજ કરું ત્યારે પણ આત્મા જુદો છે, જુદો છે એવી જાતની ધૂન રહેતી. અંતરમાં સ્વાનુભૂતિનો માર્ગ જુદો છે અને અંતરથી સ્વાનુભૂતિ થાય છે એમ ગુરુદેવે

જે બતાવ્યું છે તેના ઉપર વિચાર ચાલતા હતા.

(સ્વાનુભૂતિદર્શન-૧૮૬)



પ્રશ્ન :- અમારે કેવી રીતે કરવું ?

સમાધાન :- ભેદજ્ઞાન પ્રયાસ કરવાથી થાય છે, પ્રયાસ વગર થતું નથી. કેવળ મંથન કરતાં કરતાં ભેદજ્ઞાન થઈ જાય એમ બને નહિ; પણ પરિણતિને જુદી પાડતાં પાડતાં થઈ જાય છે. પરંતુ તે જાતનું ધ્યેય હોવું જોઈએ. પરિણતિ જુદી પાડવાનું-સ્વભાવ જુદો પાડવાનું ધ્યેય હોવું જોઈએ. અને તે પ્રયાસ કરતાં કરતાં થાય જ. ન કેમ થાય ? પોતે જ છે, બીજો કોઈ નથી. વિશ્વાસ અને પ્રતીતિને છોડવાં નહિ; શ્રદ્ધા તો બરાબર કરવી. પ્રયાસ ઓછો-વધારે થાય પણ શ્રદ્ધા બરાબર કરવી કે આ રસ્તે અને આ રસ્તે પ્રયાસ કરવાથી થવાનું જ છે. જેમ કે અહીં ગામ છે એમ નક્કી થયા પછી ચલાય ઓછું, છતાં ચાલે જ. તેવી રીતે નક્કી-દઢતા કરે તો કાર્ય થયા વગર રહેવાનું નથી. શ્રદ્ધામાં હારીશ નહિ, શ્રદ્ધા બરાબર કરજે. જેવી દેવ-શાસ્ત્ર-ગુરુની શ્રદ્ધા દઢ રાખે છે તેમ આત્મામાં આ રસ્તે જ પહોંચાશે એવી શ્રદ્ધા બરાબર રાખજે.

પોતાના પુરુષાર્થની મંદતા છે, કારણ ઓછું આપે છે, ત્યાં દષ્ટિને થંભાવતો નથી. દષ્ટિ થોડીવાર થંભી-ન થંભી ત્યાં છૂટી જાય છે—એટલે ભેદજ્ઞાન થતું નથી. રસ બહાર દોડ્યો જાય છે એટલે પરિણતિ પોતાને છોડીને બહાર જાય છે. દષ્ટિને એકદમ તે-મય-તન્મય કરતો નથી તેથી થતું નથી, આ રીતે પોતાનું કારણ છે. (સ્વાનુભૂતિદર્શન-૧૮૭)



પ્રશ્ન :- હમણાં હમણાં ધ્યાન પદ્ધતિ નીકળી છે (શેષ અંશ પૃષ્ઠ સંખ્યા-૧૬ ઉપર)

લૌકિકદષ્ટિએ તમે અને અમે પ્રવર્તશું તો પછી

અલૌકિકદષ્ટિએ કોણ પ્રવર્તશે ?

આત્મા એક છે કે અનેક છે, કર્તા છે કે અકર્તા છે, જગતનો કોઈ કર્તા છે કે જગત સ્વતઃ છે, એ વગેરે ક્રમે કરીને સત્સંગે સમજવા યોગ્ય છે; એમ જાણીને પત્ર વાટે તે વિષે હાલ લખવામાં આવ્યું નથી.

સમ્યક્પ્રકારે જ્ઞાનીને વિષે અખંડ વિશ્વાસ રાખવાનું ફળ નિશ્ચયે મુક્તપણું છે.

સંસારસંબંધી તમને જે જે ચિંતા છે, તે ચિંતા પ્રાયે અમને જાણવામાં છે, અને તે વિષે અમુક અમુક તમને વિકલ્પ રહે છે તે પણ જાણીએ છીએ. તેમજ પરમાર્થચિંતા પણ સત્સંગના વિયોગને લીધે રહે છે તે પણ જાણીએ છીએ; બેય પ્રકારનો વિકલ્પ હોવાથી તમને આકુળવ્યાકુળપણું પ્રાપ્ત હોય એમાં પણ આશ્ચર્ય લાગતું નથી, અથવા અસંભરૂપ લાગતું નથી. હવે એ બેય પ્રકારને માટે ચોખ્ખા શબ્દોમાં નીચે જે કંઈ મનને વિષે છે તે લખવાનું પ્રયત્ન કર્યું છે.

સંસારસંબંધી તમને જે ચિંતા છે, તે જેમ ઉદયમાં આવે તેમ વેદવી, સહન કરવી. એ ચિંતા થવાનું કારણ એવું કોઈ કર્મ નથી કે જે ટાળવા માટે જ્ઞાનીપુરુષને પ્રવૃત્તિ કરતાં બાધ ન આવે. જ્યારથી યથાર્થ બોધની ઉત્પત્તિ થઈ છે, ત્યારથી કોઈ પણ પ્રકારના સિદ્ધિયોગે કે વિદ્યાના યોગે સાંસારિક સાધન પોતાસંબંધી કે પરસંબંધી કરવાની પ્રતિજ્ઞા છે; અને એ પ્રતિજ્ઞામાં એક પણ મંદપણું આવ્યું હોય એમ હજુ સુધીમાં થયું છે એમ સાંભરતું નથી. તમારી ચિંતા જાણીએ છીએ, અને અમે તે ચિંતાનો કોઈ પણ ભાગ જેટલો બને તેટલો વેદવા ઇચ્છીએ છીએ. પણ એમ તો કોઈ કાળે બન્યું નથી, તે કેમ બને ? અમને પણ ઉદયકાળ એવો વર્તે છે કે હાલ સિદ્ધિયોગ હાથમાં નથી.

પ્રાણીમાત્ર પ્રાયે આહાર, પાણી પામી રહે છે. તો તમ જેવા પ્રાણીના કુટુંબને માટે તેથી વિપર્યય પરિણામ આવે એવું જે ધારવું તે યોગ્ય જ નથી. કુટુંબની લાજ વારંવાર આડી આવી જે આકુળતા આપે છે, તે ગમે તો રાખીએ અને ગમે તો ન રાખીએ તે બન્ને સરખું છે, કેમ કે જેમાં પોતાનું નિરુપાયપણું રહ્યું તેમાં તો જે થાય તે યોગ્ય જ માનવું એ દષ્ટિ સમ્યક્ છે. જે લાગ્યું તે જણાવ્યું છે.

અમને જે નિર્વિકલ્પ નામની સમાધિ છે, તે તો આત્માની સ્વરૂપપરિણતિ વર્તતી હોવાને લીધે છે. આત્માના સ્વરૂપ સંબંધી તો પ્રાયે નિર્વિકલ્પપણું જ રહેવાનું અમને સંભવિત છે, કારણ કે અન્યભાવને વિષે મુખ્યપણે અમારી પ્રવૃત્તિ જ નથી.

બંધ, મોક્ષની યથાર્થ વ્યવસ્થા જે દર્શનને વિષે યથાર્થપણે કહેવામાં આવી છે, તે દર્શન નિકટ મુક્તપણાનું કારણ છે; અને એ યથાર્થ વ્યવસ્થા કહેવાને જોગ્ય જો કોઈ અમે વિશેષપણે માનતા હોઈએ તો તે શ્રી તીર્થંકરદેવ છે.

અને એ જે શ્રી તીર્થંકરદેવનો અંતર આશય તે પ્રાયે મુખ્યપણે અત્યારે કોઈને વિષે આ ક્ષેત્રે હોય તો તે અમે હોઈશું એમ અમને દઢ કરીને ભાસે છે.

કારણ કે જે અમારું અનુભવજ્ઞાન તેનું ફળ વીતરાગપણું છે, અને વીતરાગનું કહેલું જે શ્રુતજ્ઞાન તે પણ તે જ પરિણામનું કારણ લાગે છે; માટે અમે તેના અનુયાયી ખરેખરા છીએ, સાચા છીએ.

(શેષ અંશ પૃષ્ઠ સંખ્યા-૧૬ ઉપર)

